Date of Posting 13-14 every month
Rs. 25/- per copy

DL No. DL (E)-20/5275/2017-2019
RNI No. DELHIN/2008/24416

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

❑ खंड : 12 ❑ वर्ष : 12 ❑ अंक : 12 ❑ दिसम्बर, 2018 ❑ मूल्य: 25.00 ❑ दिल्ली

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

गोबर भी बन सकता है, आपकी कमाई का जरिया

स्वच्छ दूध का उत्पादन

सर्दी के मौसम में दुधारू पशुओं की उचित देखभाल

मुर्गीपालन लाभकारी क्यों और कैसे?

AYURVET

PMKVY
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

ARF
AYURVET RESEARCH FOUNDATION

कौशल भारत

कृषि और पशुपालन-ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कुंजी

हमारे प्रमुख कौशल क्षेत्र

- दुग्ध उत्पादन
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- जैविक खाद्य उत्पादन
- बायोगैस संचालन
- जैविक खेती
- औषधीय पौधों की खेती
- हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी
- मत्स्य पालन

प्रशिक्षण पाएं, आमदनी बढ़ाएं

कृषि एवं पशुपालन को यदि कुशलता एवं ज्ञान के साथ किया जाए, तो यह आपके उत्पादन को दुगुना कर सकता है।

तो आईए, साथ मिलकर कुशल भारत का निर्माण करें, जो हमारे ग्रामीण रोजगार को संपन्नता से भर दें।

Contact Us

प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए सम्पर्क करें:-

आयुर्वेट लिमिटेड

AYURVET

कॉरपोरेट ऑफिस: 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टॉवर, प्लॉट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010(उ.प्र.),दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स: 7100202

रजिस्टर्ड ऑफिस: 4 तल, सागर प्लाजा, डिस्ट्रिक सेंटर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-92

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

खंड : 12 | अंक : 12 | दिसम्बर, 2018 | दिल्ली

प्रकाशक व प्रधान सम्पादक :
मोहन जे. सक्सेना

सम्पादक:
डॉ. अनूप कालरा

संपादकमंडल:
डॉ. प्रफुल्ल वर्मा, आनन्द मेहरोत्रा, रत्नेश पाठक एवं अमित जैन

संपादकीय सदस्य:
डॉ. दीप्ति राय, अमित बहल, डॉ.. भास्कर गांगुली, डॉ. राजकुमार यादव, डॉ. योगेश गुप्ता, डॉ. अवध बिहारी शर्मा एवं डॉ. आशीष मुद्गल

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक : 275/- रुपए

सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट **''आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली''** के नाम से दिए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चैक में बैंक कमीशन के 30/- रुपए अतिरिक्त जोड़ दें।

पत्रिका से संबंधित सभी विवादित मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

पत्रिका में प्रकाशित लेख/विचार लेखकों के निजी हैं। प्रकाशक/संपादक इस हेतु उत्तरदायी नहीं हैं।

आयुर्वेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री मोहन जे. सक्सेना द्वारा छठा तल, सागर प्लाजा, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित व मै. श्री राम इंटरप्राईजेज, एम-71, जैन मंदिर गली, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

संपादकीय/व्यवस्थापीय कार्यालय: आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.). दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स : 91-120-7100202.

Web: www.ayurvet.com, e-mail: info@ayurvet.com

कहाँ क्या है

पशुधन

- सर्दी के मौसम में दुधारू पशुओं की उचित देखभाल 5
- स्वच्छ दूध का उत्पादन 9
- डेरी पशुओं में मिल्क फीवर और कैल्शियम की कमी को नियंत्रण करने के उपाय 11
- अधिक उत्पादन वाली अच्छी नस्ल की दुधारू गाय का चुनाव 15
- गोबर भी बन सकता है, आपकी कमाई का जरिया 18
- पशुओं में सर्रा रोग : उपचार व बचाव 20
- कराएं 220 रुपए में 40 हजार तक की गाय-भैंस का बीमा 23
- दूध देने वाले पशुओं की कैसे करें देखभाल 30
- भेड़ पालन-लाभदायक व्यवसाय 33
- बकरी पालन को दें व्यावसायिक रंग 37
- दवा कंपनी की नौकरी छोड़ शुरू किया पशुपालन 2500 लीटर दूध प्रतिदिन का आज कर रहे कारोबार 39
- आयुर्वेट पशुजगत रेडियो कार्यक्रम में प्रसारित वार्ता पर आधारित : राष्ट्रीय दुग्ध दिवस 41
- मुर्गीपालन लाभकारी क्यों और कैसे? 42
- खर्च कम, लाभ ज्यादा-मुर्गीपालन 45

अन्य

- आप पूछे, विशेषज्ञ बताएं 27
- खोज खबर 28
- महत्वपूर्ण दिवस 36

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

पिछले माह कृषि इनोवेशन समिट 2018 में 'डेरी में है दम' सत्र आयोजन हुआ, जिसमें डेरी उद्योग में रोजगार और कमाई पर चर्चा करते हुए विशेषज्ञों ने पाया कि भारत में डेरी उद्योग में असीम संभावनाएं है। दुनिया के कुल डेरी उत्पादन का 20 परसेंट हिस्सा सिर्फ भारत से आता है। पूरे विश्व में डेरी उत्पादन में भारत नंबर वन है। भारत में डेरी उत्पादन लगभग 7 लाख करोड़ रुपये का है। गेहूं, गन्ना और चावल के उत्पादन को जोड़ भी दिया जाए, तो आंकड़ा यहां तक नहीं पहुंचेगा। अगले पांच साल में भारत के किसान 35 मिलियन मीट्रिक टन का दूध उत्पादन करेंगे। 1 लाख लीटर दूध का उत्पादन होने पर 11 हजार लोगों को रोजगार मिलता है। अधिक लाभ के लिए जरूरी है कि किसानों को दूध नहीं देने वाले पशुओं को बेच देना चाहिए। अब एमबीए ग्रेजुएट, मीडिया, आईटी प्रोफेशनल्स भी डेरी उद्योग में रुचि ले रहे हैं। दूध के साथ गोबर से वर्मी कम्पोस्ट बनाकर किसान आय बढ़ा रहे हैं।

दूसरी ओर भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने एक रिपोर्ट में कहा है कि भारत में दूध काफी हद तक सुरक्षित है, लेकिन इसकी गुणवत्ता का मुद्दा कायम है। राष्ट्रीय दुग्ध गुणवत्ता सर्वे, 2018 नमूनों (6,432) मानकों के आधार पर यह अब तक दूध पर सबसे बड़ा व्यवस्थित अध्ययन है। अध्ययन में यह सामने आया है कि इसमें से सिर्फ दस प्रतिशत यानी 638 नमूने ही ऐसे थे, जिनमें दूषित पदार्थ थे व उपभोग के लिए असुरक्षित था। वहीं 90 प्रतिशत नमूने सुरक्षित पाए गए। भारत में दूध काफी हद तक ऐसी मिलावट से मुक्त है, जो उसे उपभोग के लिए असुरक्षित बनाते हैं। 6,432 नमूनों में से सिर्फ 12 में ही ऐसी मिलावट पाई गई, जो दूध को असुरक्षित बनाती है। अध्ययन के नतीजों को अंशधारकों और राज्य सरकारों के साथ साझा किया गया है, ताकि देश में दूध की गुणवत्ता में सुधार के लिए सुरक्षात्मक और सुधारात्मक उपाय किए जाएंगे। हमेशा की तरह इस अंक में भी हमने स्वच्छ उत्पादन को लेकर बहुपयोगी जानकारी दी है।

खेत को कितने पानी की जरूरत है और उसे कितनी नमी चाहिए, इसे लेकर अब आपका काम आसान हो जाएगा। पं. बंगाल के दुर्गापुर स्थित केंद्रीय यांत्रिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान परिषद (सीएमईआरआइ) ने स्मार्ट इरिगेशन सिस्टम वाला सेंसर युक्त पंप विकसित किया है, जोकि खुद चलेगा और जरूरत के मुताबिक पानी देकर बंद हो जाएगा। यह बिजली के साथ सौर ऊर्जा से भी चल सकेगा। इससे पानी की बर्बादी तो रुकेगी ही आपकी ऊर्जा और समय की भी बचत होगी। घर की छत, खाली जमीन या पहाड़ी अंचल में खेती या बागवानी में यह तकनीक बेहद कारगर होगी।

आपको जानकर खुशी होगी कि नए वर्ष से हम आपके लिए दो नए कॉलमों की शुरूआत करने जा रहे हैं ''सफलता की कहानी, आपकी जुबानी'' और ''इनामी प्रतियोगिता''। आपसे विनम्र निवेदन है कि आप अपनी सफलता की कहानी को लिख भेजे, ताकि उसे आगामी अंक में स्थान दिया जा सके। ऐसी ही अनेक उपयोगी जानकारियां लिए आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार पत्रिका का नया अंक आपके हाथ में है, तो फिर देर काहे कि पत्रिका के नए अंक में शामिल आलेखों को पढ़े और हमें लिख भेजें कि आपको यह अंक कैसा लगा। आपको नववर्ष की अग्रिम शुभ एवं मंगलकामनाएं।

(मोहन जे. सक्सेना)

सर्दी के मौसम में दुधारू पशुओं की उचित देखभाल

-डॉ. श्वेता सिंह चौहान एवं डॉ विजय लहँगेर

पशु किसान के जीवन का आज भी प्रमुख हिस्सा हैं। हालांकि खेती से जुड़े यंत्र आ जाने से आज खेती में काम आने वाले पशुओं की अहमियत थोड़ा कम हुई है, उसके बावजूद आज भी बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं, जहां पर आज भी पशुओं का इस्तेमाल खेती में किया जाता है। इसके अलावा, दुधारू पशुओं की एहमियत आज भी किसान के जीवन में उतनी ही है। लेकिन बहुत से पशुपालकों को नहीं पता होता है कि वो पशुओं की देखभाल कैसे करें, जिससे उनके पशु स्वस्थ रहें। इस लिए आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि पशुपालक सर्दी के मौसम में पशुओं की देखभाल कैसे करें।

उत्तरी क्षेत्र में वर्ष के चार महीने नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी और फरवरी का समय शरद ऋतु माना जाता है। डेरी व्यवसाय के लिए यह सुनहरा काल होता है, क्योंकि अधिकतर गायें एवं भैसें इन्हीं महीनों में ब्याती हैं। जो गाय व भैसें अक्टूबर या नवम्बर में ब्याती है, उनके लिए समय अधिकतम दूध उत्पादन का होता है। यह काल दुधारू पशुओं, विशेषकर भैसों, के प्रजनन के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि प्रायः भैंस इसी मौसम में गाभिन होती हैं। कड़ी सर्दी के कारण इन दिनों में विभिन्न रोगों से ग्रसित होकर नवजात बच्चों की मृत्युदर भी अधिक हो जाती है। इसलिए दुधारू पशुओं से अधिक उत्पादन व अच्छे प्रजनन क्षमता बनाये रखने के लिए सर्दी के मौसम में पशुओं के रख-रखाव के कुछ विशेष उपाय किये जाने की आवश्यकता होती है।

आहार एवं जल प्रबन्धन

अधिक सर्दी के मौसम में, सर्दी के प्रभाव से बचने हेतु

पशुओं में सर्दी लगने के लक्षण

- सुस्त, थका हुआ सा बैठा रहना।
- आँख से पानी बहना।
- पशु की नाक से पानी और बलगम का बहना।
- पशु का जुगाली न करना।
- खान-पान में कमी या बिल्कुल ही नहल्ल खाना।
- दुग्ध उत्पादन में कमी।
- संक्रमण होने पर शरीर के तापमान में कमी होना।

दुधारू पशुओं की ऊर्जा की आवश्यकता बढ़ जाती है। इसे पूरा करने के लिए दुधारू पशुओं को प्रतिदिन 1 किलोग्राम दाना मिश्रण प्रति पशु, उनकी अन्य पोषण आवश्यकताओं के अतिरिक्त खिलाना चाहिए, जिससे दुधारू पशुओं का दुग्ध उत्पादन बना रहता है।

दुधारू व गाभिन पशुओं को अच्छी गुणवत्ता के हरे चारे जैसे बरसीम व जई की भरपेट उपलब्धता के साथ-साथ सूखा चारा जैसे गेंहूँ की तुड़ी (कम से कम 2-3 किलोग्राम प्रति पशु प्रतिदिन) भी अवश्य खिलाएं। इससे इस मौसम में पशु में अधिक ऊर्जा बनी रहती है। खनिज-मिश्रण में फास्फोरस की मात्रा बढ़ा दें। पशुओं को गीला चारा बिलकुल न दें, अन्यथा अफारा होने की संभावना बढ़ जाती है। जाड़े के दिनों में पशु को हरा चारा जरुर खिलाएं और कम लागत में अधिक दूध पाएं।

अत्यधिक दूध देने वाली गायों व भैसों के राशन में सोयाबीन या बिनौले का इस्तेमाल करके राशन की उष्मा सघनता को बढ़ाया जा सकता है, जिससे इन पशुओं का दुग्ध

बातें आपके काम की

- पशुओं को खुली जगह में न रखें, ढके स्थानों में रखे।
- रोशनदान, दरवाजों व खिड़कियों को टाट/बोरे से ढंक दें।
- पशुबाड़े में गोबर और मूत्र निकास की उचित व्यवस्था करे, ताकि जलभराव न हो पाए।
- पशुबाड़े को नमी/सीलन से बचाएं और ऐसी व्यवस्था करें कि सूर्य की रोशनी पशुबाड़े में देर तक रहे।
- बासी पानी पशु को न पिलाएं।
- बिछावन में पुआल का प्रयोग करें।
- पशु को जूट के बोरे को ऐसे पहनाएं, ताकि खिसके नहीं।
- नवजात पशु को खीस जरूर पिलाएं, इससे बीमारी से लड़ने की क्षमता में वृद्धि होती है।
- प्रसव के बाद मां को ठंडा पानी न पिलाकर गुनगुना पानी पिलाएं। गाभिन पशु का विशेष ध्यान रखें व प्रसव में जच्चा-बच्चा को ढ़के हुए स्थान में बिछावन पर रखकर ठंड से बचाव करें।
- ठंड से प्रभावित पशु के शरीर में कपकपी, बुखार के लक्षण होते हैं, तो तत्काल निकटवर्ती पशु चिकित्सक को दिखाएं।
- बिछावन समय-समय पर बदलते रहे।
- गर्मी के लिए पशुओं के पास अलाव जला के रखें, पर पशु की पहुंच से दूर रखें। इसके लिए पशु के गले की रस्सी छोटी बांधे ताकि पशु अलाव तक न पहुंच सके।
- सर्दी के दिनों में पशुओ को सामान्य दिनों के अपेक्षा ज्यादा खुराक देनी चाहिए। पशु को मिलने वाला संतुलित आहार दूध उत्पादन को बढ़ाता है।
- पशुओं को खिलाया जाने वाला चारा भी इस तरह का हो, जिसकी पाचन क्षमता 60 प्रतिशत से अधिक हो।

- अगर दुधारू पशुओं को सर्दी के दिनों में संतुलित आहार के साथ साथ आयुमिन-वी 5 (खनिज मिश्रण), रुचामैक्स एवं रेस्टोबल दिया जाए, तो पशु का दूध नहीं घटेगा।
- तुड़ी या पैडी पशु के लिए ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत है। यह सर्दियों में पशुओं को भरपेट देना चाहिए।
- सर्दियों के दिनों में हरे चारे के रूप में बरसीम जई दी जा सकती है। सूखे तुड़े में इसे चौथे हिस्से में लेकर आधा हिस्से तक मिलाकर दें।
- अनाज के तौर पर गेहूं का दलिया, खल, चना, ग्वार बिनोला आदि दिया जाना चाहिए।
- बिनोले रात को पानी में भिगोकर रखें। सुबह पानी फेंक कर, उसे ताजे पानी में उबालकर पशु को दिन में दो बार खिलाएं।
- बाजरा पशुओं को कम हजम होता है, इसलिए बाजरा किसी भी संतुलित आहार/बाखर में 20 प्रतिशत से अधिक नही मिलाना चाहिए।
- शीत लहर के दिनों में पशु की खोर के ऊपर सैंधा नमक का ढेला रखें, ताकि पशु जरूरत के अनुसार उसको चाटता रहे।

उत्पादन बना रहता है।

सर्दी में पशुओं के पीने का पानी अक्सर अधिक ठंडा होता है, जिसे पशु कम मात्रा में पीते हैं। इसलिए यह ध्यान रखा जाए कि पानी का तापमान बहुत कम न हो। सामान्यतः पशु 15-20 सेंटीग्रेड पानी के तापमान को अधिक पसंद करते हैं। कोशिश करें कि पशुओं के लिए ताजे पानी की व्यवस्था हो एवं ओवरहेड टैंक के ठन्डे पानी को पशुओं को न पिलाएं।

आवास प्रबन्धन

वातावरण में धुंध व बारिश के कारण अक्सर पशुओं के

बाड़ों के फर्श गीले रहते हैं, जिससे पशु ठन्डे में बैठने से कतराते हैं। अतः इस मौसम में अच्छी गुणवत्ता का बिछावन तैयार करें, जिससे कि उनका बिछावन 6 इंच मोटा हो जाए। इस बिछावन को प्रतिदिन बदलने की भी आवश्यकता होती है। रेत या मेट्रेस्स का बिछावन पशुओं के लिए सर्वोत्तम माना गया है, क्योंकि इसमें पशु दिनभर में 12-14 घंटे से अधिक आराम करते हैं, जिससे पशुओं की ऊर्जा क्षय कम होती है।

नवजात एवं बढ़ते बछड़े-बछड़ियों को सर्दी व शीत लहर से बचाव की विशेष आवश्यकता होती है। इन्हें रात के समय बंद कमरे या चारों ओर से बंद शेड के अंदर रखना चाहिए, पर प्रवेश द्वार का पर्दा/दरवाजा हल्का खुला रखें, जिससे कि हवा

ठंड के मौसम में से होने वाले रोग व उपचार

अफारा

ठंड के मौसम में पशुपालन करते समय पशुओं को जरूरत से ज्यादा दलहनी हरा चारा जैसे बरसीम व अधिक मात्रा में अन्न व आटा, बचा हुआ बासी भोजन खिलाने के कारण यह रोग होता है। इसमें पशु के पेट में गैस बन जाती है। बाईं कोख फुल जाती है। रोगग्रस्त होने पर पशु को आप **अफानिल** दें। इस दवा को पिलाने पर तुरंत लाभ होता है।

सर्दी में वातावरण में नमी के कारण पशुओं में खुरपका, मुंहपका तथा गलाघोटू जैसी बीमारियों से बचाव के लिए समय पर टीकाकरण करें।

निमोनिया

दूषित वातावरण व बंद कमरे में पशुओं को रखने के कारण तथा संक्रमण से यह रोग होता है। ऐसे में रोगग्रस्त पशुओं की आंख व नाक से पानी गिरने लगता है। उपचार के लिए बोबीटस देने से भी काफी आराम मिलता है, इस दवा को देने से अन्य फायदे भी बहुत-से हैं।

ठंड लगना

इससे प्रभावित पशु को नाक व आंख से पानी आना, भूख कम लगना, शरीर के रोएं खड़े हो जाना आदि लक्षण आते हैं। उपचार के लिए एक बाल्टी खौलते पानी के ऊपर सूखी घास रख दें। रोगी पशु के चेहरे को बोरे या मोटे चादर से ऐसे ढंके कि नाक व मुंह खुला रहे। फिर खौतले पानी भरी बाल्टी पर रखी घास पर तारपीन का तेल बूंद-बूंद कर गिराएं। भाप लगने से पशु को आराम मिलेगा।

इसके अलावा आप आयुमिन वी-5 दें सकते है, जिसमें मुख्यतः सभी प्रोटीन्स, विटामिन्स और मिनरल्स मिलाकर बनाया गया है। आप पशु को रेस्टोबल भी दें, जोकि पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और पशुओं को बीमारियों से काफी हद तक बचाता है।

ठंड के मौसम में प्रायः पशुओं को दस्त की शिकायत होती है। ऐसे में पशु पशुचिकित्सक के परामर्श से उचित दवा दें। साथ ही रुचामैक्स देने से भी तुरंत लाभ होता है ।

ठंड के मौसम में पशुओं की वैसे ही देखभाल करें, जैसे हम लोग अपनी करते हैं। उनके खाने-पीने से लेकर उनके रहने के लिए अच्छा प्रबंध करे, ताकि वो बीमार न पड़े और उनके दूध उत्पादन पर प्रभाव न पड़े। खासकर नवजात तथा छह माह तक के बच्चों की विशेष देखभाल करें, और जो लोग पशुपालन कर रहे हैं वो इन बातों को जरूर ध्यान में रखे।

आ जा सके। तिरपाल, पौलिथिन शीट या खस की टाट/पर्दा का प्रयोग करके पशुओं को तेज हवा से बचाया जा सकता है।

स्वास्थ्य प्रबन्धन

ठण्ड में पैदा वाले बछड़े-बछड़ियों के शरीर को बोरी, पुआल आदि से रगड़ कर साफ करें, जिससे उनके शरीर को गर्मी मिलती रहें और रक्तसंचार भी बढ़े। ठण्ड में बछड़े-बछड़ियों का विशेष ध्यान रखे, जिससे कि उनको सफेद दस्त, निमोनिया आदि रोगों से बचाया जा सके। दस्त की शीघ्र रोकथाम के लिए अपने पशुचिकित्सक के परामर्श से पशु को डायरोक दें।

याद रहे, कि पशुघर को चारों तरफ से ढक कर रखने से अधिक नमी बनती है, जिससे रोग जनक कीटाणु के बढ़ने की संभावना होती है। ध्यान रहे, कि छोटे बच्चों के बाड़ों के अदंर का तापमान 7-8 डिग्री सेंटीग्रेड से कम न हो। यदि आवश्यक समझें, तो रात के समय इन शेडों में हीटर का प्रयोग भी किया जा सकता है। बछड़े-बछड़ियों को दिन के समय बाहर धूप में रखना चाहिए तथा कुछ समय के लिए उन्हें खुला छोड़ दें, ताकि वे दौड़-भाग कर स्फूर्तिवान हो जाएँ।

अधिकतर पशुपालक सर्दियों में रात के समय अपने पशुओं को बंद कमरे में बांध का रखते हैं और सभी दरवाजे खिड़कियों बंद कर देते हैं, जिससे कमरे के अंदर का तापमान काफी बढ़ जाता है और कई दूषित गैसें भी इकट्ठी हो जाती है,जो पशु के स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। अतः ध्यान रखें कि दरवाजे-खिड़कियाँ पूर्णतः बंद न हो।

अत्यधिक ठण्ड में पशुओं को नहलाएं नहीं, केवल उनकी ब्रुश से सफाई करे, जिससे कि पशुओं के शरीर से गोबर, मिट्टी आदि साफ हो जाएं। सर्दियों के मौसम में पशुओं व छोटे बछड़े-बछड़ियों को दिन में धूप के समय ताजे/गुनगुने पानी से ही नहलाएं।

अधिक सर्दी के दिनों में दुधारू पशुओं के दूध निकालने से पहले केवल पशु के पिछवाड़े, अयन व थनों को अच्छी प्रकार ताजे पानी से धोएं। ठंडे पानी से थनों को ढोने से दूध उतरना/लेट-डाउन अच्छी प्रकार से नहीं होता और दूध दोहन पूर्ण रूप से नहीं हो पाता।

इस मौसम में अधिकतर दुधारू पशुओं के थनों में दरारें पड़ जाती है, ऐसा होने पर दूध निकालने के बाद पशुओं के थनों पर कोई चिकानी युक्त/एंटीसेप्टिक क्रीम अवश्य लगायें अन्यथा थनैला रोग होने का खतरा बढ़ जाता है। दूध दुहने के तुरंत बाद पशु का थन छिद्र खुला रहता है जो थनैला रोग का कारक बन सकता है, इसलिए पशु को खाने के लिए कुछ दे देना चाहिए जिससे कि वह लगभग आधे घंटे तक बैठे नहीं, ताकि उनका थन छिद्र बंद हो जाए।

ठंड के मौसम में पशुपालन करते समय पशुओं के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव न पड़े और उत्पादन न गिरे। इसके लिए पशुपालकों को अपने पशुओं की देखभाल ऊपर दिए निर्देशों के अनुसार करना बहुत जरूरी है। ठंड़ के मौसम में पशुओं की वैसे ही देखभाल करें, जैसे हम लोग अपनी करते हैं। उनके खाने-पीने से लेकर उनके रहने के लिए अच्छा प्रबंध करें, ताकि वह बीमार न पड़ें और उनके दूध उत्पादन पर प्रभाव न पड़े, खासकर नवजात तथा छह माह तक के बच्चों की विशेष देखभाल करें। □□

1. पशुचिकित्सक, जबलपुर, म.प्र., ईमेलः shweta.singh98@gmail.com
2. पशुचिकित्सा सहायक, शल्यज्ञ, पशुचिकित्सालय निवास, मंडला, म.प्र., ईमेलः vijay.ss.11892@gmail.com

स्वच्छ दूध का उत्पादन

-डॉ. रोहिताश कुमार

यह आवश्यक है कि अन्य खाने की वस्तुओं की भांति दूध को भी स्वच्छ एवं बीमारियों के जीवाणुओं से रहित रखा जाए। स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए किसान भाइयों को किन-किन बातों का रखना चाहिए, इस बारे में हमने इस आलेख में जानकारी देने का प्रयास किया है, ताकि उन्हें आर्थिक नुकसान न हो।

साधारणतः यह देखा गया है कि दूहारी करते वक्त तथा दूध को एक स्थान से दूसरे स्थान तक परिवहन करते समय दूध अस्वच्छ हो जाता है। दूध में मिट्टी के कण, बाल, चारे का कचरा, दाना, जीवाणु इत्यादि मिल जाते है, जिससे दूध अस्वच्छ हो जाता है और दूध गर्म करने पर फट जाता है। इससे किसान भाइयों को आर्थिक हानि का सामना करना पड़ता है। इसलिए यह आवश्यक है कि अन्य खाने की वस्तुओं की भांति दूध को भी स्वच्छ एवं बीमारियों के जीवाणुओं से रहित रखा जाए। स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए अगर किसान भाई निम्न बातों पर ध्यान दे, तो स्वच्छ दूध का उत्पादन किया जा सकता है:-

पशु का स्वास्थ्य एवं सफाई

- स्वच्छ दूध उत्पादन हेतु दुधारू पशु स्वस्थ होना चाहिए। पशु किसी भी बीमारी से ग्रसित नहीं होना चाहिए।
- दुधारू पशु को निश्चित अवधि के पश्चात् पशु चिकित्सक को अवश्य दिखाना चाहिए।
- दुग्धशाला में ले जाने से पहले पशु के शरीर की सफाई कर ले। विशेषकर पशु के शरीर का पिछला व निचला भाग।

दूध दूहने वाले मनुष्य का स्वास्थ्य एवं सफाई

- पशुपालक किसी भी बीमारी से ग्रसित नहीं होना चाहिए।
- दूध व्यवसाय में लगे हुए पशुपालक की डॉक्टरी जांच एक निश्चित अवधि के पश्चात् होनी चाहिए।
- दूहारी के समय पशुपालक के हाथ साफ होने चाहिए।

पशुशाला की सफाई एवं बनावट

- पशुशाला स्वच्छ तथा खुली होनी चाहिए।
- दूहारी करने से करीब डेढ़ घंटे पूर्व पशुशाला की सफाई करें।
- पशुशाला की दीवार पर समय-समय पर सफेदी करें।
- पशुशाला की बनावट अच्छी होनी चाहिए।

दूध दूहने वाले बर्तन की बनावट तथा उसकी सफाई

- दूध दूहने वाले बर्तन सदैव ही एक चादर के होने चाहिए।
- दूध के बर्तनों को पूर्णरूप से निर्जलिकृत कर लेना चाहिए।
- दूध के बर्तनों को गुनगुने पानी से धोकर, गर्म पानी में सोडा डालकर, ब्रुश से रगड़कर धोना चाहिए तथा स्वच्छ पानी से धोना चाहिए।
- धोने के बाद बर्तनों को उल्टा रखकर धूप में अच्छी तरह सुखा देना चाहिए।

पशुशाला से दूध हटाने का समय

- दुहारी के तुरंत पश्चात् दूध को स्वच्छ स्थान पर रख देना चाहिए।
- यदि गर्म करने में समय लगे, तो दूध को ठंडे स्थान पर भंडारण करना चाहिए।

उपरोक्त बातों पर अगर किसान भाई ध्यान देवे, तो स्वच्छ दूध का उत्पादन कर सकते हैं। □□

डॉ. रोहिताश कुमार, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग, पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर
ईमेल: dr.rkdoot@gmail.com

थनैला की समस्या है बहुत भारी, रोकथाम में ही है समझदारी।
समय से जांच और उपचार, करें हम इस पर विचार।।

AYURVET™

मैस्टीलेप के फायदे

- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं एवं थनैला से बचाएं
- स्वच्छ दूध उत्पादन में सहायक
- थन की सूजन एवं दर्द कम कर पशु को आराम दिलाएं

मैस्टीलेप 50 ग्राम, 125 ग्राम ट्यूब तथा 125 मि.ली. स्प्रे में भी उपलब्ध है।

मैस्टीलेप

थनैला रोग की रोकथाम के लिये हर्बल जैल

अधिक जानकारी के लिए हमारे टोल फ्री नंबर पर संपर्क करें।

1800-123-3734

सोम-शुक्र प्रातः 9 से 6 बजे तक

डेरी पशुओं में मिल्क फीवर और कैल्शियम की कमी को नियंत्रण करने के उपाय

-अनीता गांगुली[1], आर एस बिसला[2], वंदना भनोट[3], संजीव सिंह[4] एवं इंद्रजीत गांगुली[4]

सर्दी के मौसम में पशुओं के रख रखाव उन्हें संतुलित मात्रा में उचित चारा देकर पशुपालक दूध की क्षमता बढ़ा सकते हैं। दूध उत्पादन में कमी का मुख्य कारण पशुओं को उसी अनुपात में न मिलने वाली खुराक है। सर्दी के दिनों में पशुओ को सामान्य दिनों की अपेक्षा ज्यादा खुराक देनी चाहिए। पशु को मिलने वाला संतुलित राशन दूध उत्पादन को बढ़ाता है।

दुग्ध ज्वर (मिल्क फीवर) एक बहुत ही प्रसिद्ध चयापचयी विकार है, जो उच्च उत्पादक डेरी पशुओं में प्रसव के निकट कैल्शियम की कमी की वजह से होता है। कैल्शियम की कमी को ''हाइपोकैल्शीमिया'' भी कहा जाता है। यह दो प्रकार का होता है। लाक्षणिक (क्लिनिकल) एवम् उपलाक्षणिक (सबक्लिनिकल)। लाक्षणिक में हमें बीमारी के लक्षण दिखाई देते हैं, मगर उपलाक्षणिक में लक्षण दिखाई नहीं देते। कैल्शियम की कमी प्रतिरक्षा कोशिकाओं की क्षमता को कम करने के साथ-साथ चिकनी सुचारू मांसपेशियों में सकुंचन कम कर देता है, जो अन्य स्वास्थ्य विकारों जैसे कि कीटोसिस, थनों में सूजन, रिटेंड प्लेसेंटा, विस्थापित जठरान्त (डिसप्लेस्ड एबओमासम) तथा गर्भाशय भ्रन्श की संभावना बढ़ा देता है। कैल्शियम कंकाल उत्तक, चिकनी मांसपेशियों तथा नसों के लिये बहुत महत्वपूर्ण होता है। सामान्य रक्त कैल्शियम 8-12 मिलीग्राम/डेसिलीटर तक होता है। जब कैल्शियम की मात्रा कम हो कर 7.5-5.0 मिलीग्राम/डेसिलीटर तक रह जाती है, तब जठरान्त गतिशीलता 30-70 प्रतिशत तक कम हो जाती है। प्रसव के बाद खाने की मात्रा में एक बड़ी गिरावट नकारात्मक ऊर्जा संतुलन को बढ़ा देती है।

हालांकि मिल्क फीवर गंभीर कैल्शियम की कमी की लाक्षणिक अभिव्यक्ति है, पर सबक्लिनिकल (उपलाक्षणिक) हाइपोकैल्शीमिया एक उभरती हुई चिंता है। उपलाक्षणिक कैल्शियम की कमी लाक्षणिक दुग्ध ज्वर से अधिक महंगी पड़ती है, क्योंकि इससे दूध की मात्रा में गिरावट आ जाती है और इसका कारण भी पता नहीं चलता है। इसलिए दोनों विकारों, लाक्षणिक तथा उपलाक्षणिक कैल्शियम की कमी का नियंत्रण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत लेख डेरी पशुओं में कैल्शियम की कमी तथा मिल्क फीवर कम करने के तरीकों पर केन्द्रित है।

चारे द्वारा कैल्शियम की कमी को दूर करने के तरीके

कैल्शियम प्रतिबंध चारा

शुष्क अवधि में पशुओं को कैल्शियम प्रतिबंध आहार देना, मिल्क फीवर को रोकने की पारम्परिक पद्धति है। अगर कम कैल्शियम (< 20 ग्राम रोजाना) वाला चारा प्रसव से पहले और उच्च कैल्शियम वाला चारा प्रसव के बाद खिलाया जाये, तो मिल्क फीवर को काफी हद तक कम किया जा सकता है। आमतौर पर शुष्क अवधि में गाय के चारे में से कुछ या पूरा अल्फा-अल्फा घास, मक्का, साइलेज एवम् दाना से बदला जाता है।

आहारीय मैग्नीशियम

प्रसव के आसपास कैल्शियम का संतुलन बनाये रखने में मैग्नीशियम भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक विश्लेषण में पाया गया है कि चारे में मैग्नीशियम बढ़ाने से लाक्षणिक दुग्ध ज्वर कम होता है। मैग्नीशियम, पैराथायराईड

हार्मोन के स्त्राव तथा सक्रिय विटामिन-डी के संश्लेषण द्वारा कैल्शियम का संतुलन बनाने में मदद करता है। चारे में मैग्नीशियम की मात्रा कुल 40-50 ग्राम तक होनी चाहिये।

ओरल कैल्शियम की खुराक के साथ दुग्ध ज्वर का निवारण

पशु को ओरल कैल्शियम खिलाना लाभदायक हो सकता है, क्योंकि उपलाक्षणिक मिल्क फीवर अधिकतर प्रसव के कुछ दिनों तक ही पाया जाता है। एक विश्लेषण में यह पाया गया है कि ओरल कैल्शियम का उपयोग उन गायों में भी लाभदायक है, जिनमे मिल्क फीवर की घटनायें कम होती हैं। प्रारम्भिक स्तनपान के समय मौखिक कैल्शियम का उपयोग किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त जिन पशुओं ने प्रारम्भिक स्तनपान के समय चारा खाना बंद कर दिया हो उनको ओरल कैल्शियम खिलाना बहुत जरूरी है, क्योंकि इनमें कैल्शियम की कमी होने की संभावनाएं ज्यादा होती हैं।

मौखिक कैल्शियम के पूरक के प्रकार

ओरल सप्लीमेंट में कैल्शियम के स्त्रोत और उसके भौतिक रूप, कैल्शियम के अवशोषण और रक्त कैल्शियम प्रतिक्रियाताओं को प्रभावित करने की क्षमता होती है।

कैल्शियम क्लोराइड

इसकी रक्त में कैल्शियम सांद्रता बनाये रखने की क्षमता होती है। यह पशुओं में अम्लीय प्रतिक्रिया को उत्सर्जित करता है, जिससे उनके स्वयं के कैल्शियम भंडार से कैल्शियम प्राप्त हो सके। 50 ग्राम कैल्शियम 250 मिलीलीटर पानी में घोल कर पिलाने से सबसे अच्छा अवशोषण होता है। अगर 100 ग्राम मौलिक कैल्शियम पानी में घोल कर पिलाते हैं, तो यह खून में कैल्शियम की मात्रा बहुत ज्यादा बढ़ा देता है, जो कि कैल्शियम का संतुलन बिगाड़ देता है और यह नुकसानदायक हो सकता है। जब पतले तरल पदार्थ मुख मार्ग से दिये जाते हैं तब इनके श्वास नली में जाने का जोखिम बढ़ जाता है। कैल्शियम क्लोराइड, ऊपरी श्वास उत्तकों के लिये ज्वलनकारी है।

कैल्शियम के दो नमकों का मिश्रण

कैल्शियम क्लोराइड तथा कैल्शियम सल्फेट के मिश्रण से तैयार किये गये बोलस खिलाने से खून में कैल्शियम की मात्रा में निरंतर सुधार देखा गया है। इन बोलसों को खिलाने से सांस की नली में कोई मुश्किल नहीं आती और इनको पशुओं को खिलाना भी आसान होता है।

कैल्शियम प्रोपिओनेट

इसका अवशोषण बहुत धीरे होता है, इसलिए यह उच्च मात्रा में दिया जाना चाहिये (आमतौर पर 75 से 125 ग्राम तक)। कैल्शियम प्रोपिओनेट कैल्शियम के अलावा शर्करा भी प्रदान करता है।

कैल्शियम व्यावसायिक रूप से विभिन्न प्रकार के मिश्रण तथा टेबलेट/बोलस में उपलब्ध है। इनमें अक्सर कैल्शियम फास्फोरस, मैग्नीशियम तथा विटामिन डी सही मात्रा में होते हैं।

प्रसव के सापेक्ष मौखिक कैल्शियम खिलाने का समय

प्रसव के आसपास कैल्शियम की कम से कम दो खुराक खिलानी चाहिये, एक प्रसव के समय तथा दूसरी खुराक अगले दिन। प्रसव के बाद, 12-24 घंटे के बीच में रक्त कैल्शियम के निम्न स्तर पर जाने की उम्मीद होती है। अगर प्रसव के आसपास कैल्शियम की एक खुराक दे देते हैं, तो पशु उस समय जब कैल्शियम की कमी जोकि स्वाभाविक रूप से होती है, को सह पता है। मूल प्रोटोकॉल में चार खुराक के लिये कहा गया है, एक 12 घंटे प्रसव से पहले, एक प्रसव के समय, एक प्रसव के 12 घंटे बाद और एक खुराक प्रसव के 24 घंटे बाद। प्रसव से पहले 12 घंटे तय करना बहुत मुश्किल होता है, इसलिये कई पशु इस खुराक के बिना भी ब्या जाती है। प्रसव के समय कैल्शियम की खुराक देना व्यावहारिक रूप से चुनौतीपूर्ण नहीं है। प्रसव से एक दिन बाद भी अगर कैल्शियम की खुराक दे देते है, तो यह पशु को कैल्शियम की कमी से बचाने में सहायता करेगा।

लाक्षणिक मिल्क फीवर के लिये उपचार

प्रसव के आसपास डेरी पशुओं में मिल्क फीवर के नैदानिक लक्षण तीन अवस्थाओं में विभाजित किये जा सकते है।

प्रथम अवस्था

इसके लक्षण सूक्ष्म और क्षणिक हैं, इसलिये यह नजरअंदाज हो सकते हैं। प्रभावित पशु उत्तेजित, कमजोर, घबराये हुए दिखाई देते हैं। कुछ पशु अक्सर अपना वजन फेरबदल करते रहते हैं। इन पशुओं में अवलंबन् देखने को नहीं मिलता है। प्रसव के अलावा भी कुछ पशुओं में कैल्शियम की कमी हो जाती है। इनके लक्षण प्रथम अवस्था मिल्क फीवर जैसे ही होते हैं। इस तरह की गैर प्रसवोन्मुखी कैल्शियम की कमी अक्सर असामान्य तनाव, आहार में कैल्शियम की कमी, पाचन में गंभीर गड़बड़ी या गंभीर (विषाक्त) स्तन सूजन के दौरान देखी जाती है। प्रथम अवस्था मिल्क फीवर में ओरल कैल्शियम ही सबसे अच्छा तरीका है। कैल्शियम की खुराक देने के बाद एक गाय 30 मिनट के भीतर ही कैल्शियम की एक प्रभावी राशि अपने खून में अवशोषित कर लेती है। खड़ी गायों में इन्ट्रावीनस (रक्त शिरा में) कैल्शियम देने की संस्तुत नहीं की जाती है। अगर इन्ट्रावीनस कैल्शियम द्वारा उपचार करते हैं, तो यह खून में कैल्शियम की मात्रा को बहुत तीव्रता से बड़ा देता है, जो खतरनाक हो सकता है। इससे घातक हृदय सम्बंधित मुश्किलें आ सकती हैं और इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि ये पशुओं के खून में कैल्शियम जुटाने की क्षमता को बंद कर देता है।

द्वितीय अवस्था

दुग्ध ज्वर की इस अवस्था में गाय नीचे बैठ जाती है, और अपना सिर अपने पार्श्व की तरफ मोड़ कर रखती है। इन पशुओं में गंभीर अवसाद तथा आंशिक पक्षाघात (पार्श्यिल पैरालिसिस) जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।

तृतीय अवस्था

इस अवस्था में गाय को पूरी तरह से लकवा मार जाता है पशु में गंभीर रूप से अवसाद दिखाई देता है। वह जमीन पर शरीर को एक तरफ करके लेट जाती है और पशु अवचेतन अवस्था में दिखाई देता है। ऐसे पशु कुछ ही घंटो के भीतर बिना उपचार के मर जाते हैं।

द्वितीय तथा तृतीय अवस्था वाले दुग्ध ज्वर मामलो में तुरंत इलाज किया जाना चाहिये नहीं, तो जल्दी मांसपेशियों तथा हड्डियों में क्षति हो सकती है। ऐसे में धीमी गति से इन्ट्रावीनस 23% कैल्शियम ग्लूकोनेट लगाना चाहिये। यह गाय को 10.8 ग्राम मौलिक कैल्शियम प्रदान करता है, यह गाय में कैल्शियम की कमी को पूरा करने के लिये पर्याप्त है। इन्ट्रावीनस कैल्शियम की ज्यादा खुराक देने में कोई लाभ नहीं है। इन्ट्रावेनस उपचार के बाद जिन पशुओं में ठीक होने के लक्षण दिखाई दे रहे होते हैं उन पशुओं का मौखिक कैल्शियम द्वारा उपचार करने की जरूरत होती है नहीं, तो पुनरावर्तन का जोखिम उठाना पड़ सकता है। जो पशु चारा खाना बंद कर देते हैं या फिर जिनमें आंत गतिशीलता कम हो जाती है, ऐसे पशुओं में क्षणिक कैल्शियम की कमी हो जाती है। यह कहना मुश्किल है कि कैल्शियम की कमी पहले हुई है या आंतों में स्थैतिकता। जो भी मामला हो, दोनों समस्याएं सकारात्मक रूप से एक दूसरे को मजबूत करती हैं। ऐसे पशुओं का उपचार ओरल कैल्शियम द्वारा संभव है।

निष्कर्ष

डेरी पशुओं में उपलक्षणिक हाइपोकैल्शीमिया एक अत्यंत महत्वपूर्ण समस्या बनी हुई है। यह अन्य विकारों के साथ-साथ दूध की मात्रा में गिरावट कर देती है। कैल्शियम की कमी को रोकने के लिये हमें पशुओं के चारे में कैल्शियम तथा मैग्नीशियम की मात्रा का खास ध्यान रखना चाहिये। प्रसव के दौरान ओरल कैल्शियम देना न भूलें तथा द्वितीय तथा तृतीय अवस्था वाले मिल्क फीवर मामलों में तुरंत इलाज किया जाना चाहिये।

□□

1 एवं 2 क्षेत्रीय स्टेशन, लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, करनाल (हरियाणा)
3 ए.डी.आइ.ओ (अम्बाला), लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार (हरि.)
4 भाकृअनुप-राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल

कीटोसिस एवं नेगेटिव ऊर्जा से छुटकारा पाएं

कीटोरोक अपनाएं

AYURVET™

कीटोरोक के फायदे

- लीवर की बेहतर सुरक्षा कर कीटोसिस से बचाव और इलाज में लाभदायक
- शरीर में सामान्य ग्लूकोज़ एवं ऊर्जा स्तर को बनाएं रखे
- दूध उत्पादन बढ़ाएं और अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करने में मदद करे

पशुचिकित्सकों द्वारा अपनाया गया वैज्ञानिक रूप से जांचा परखा भरोसेमंद हर्बल उपाय

कीटोरोक

कीटोसिस की रोकथाम एवं उपचार के लिए

उपचार के लिए:

200 मि.ली. प्रतिदिन दो बार *2* दिनों तक, अगले *2* दिन *100* मि.ली. दिन में एक बार

अधिक उत्पादन वाली अच्छी नस्ल की दुधारू गाय का चुनाव

-संदीप कुमार सांगवान एवं सुरेंदर सिंह ढाका

मादा पशु के शरीर का आकार त्रिभुजनुमा होना चाहिए, जिसमें उसकी गर्दन पतली तथा शरीर का पिछला हिस्सा चौड़ा होना चाहिए। आकर्षक मादाजनित गुणों के साथ-साथ सभी अंगों में समानता व सांमजस्य होना चाहिए। पशु की आंखें व त्वचा चमकदार और मजल गीला होना चाहिए।

जब कोई नया पशु खरीदा जाता है, तो उसे उसकी नस्ल से करीबी (ब्रीड प्यूरिटी) और दुग्ध उत्पादन की क्षमता के आधार पर परखा जाता है। दुधारू गायों के लिए चुनाव एक या दो बार प्रजनन के पश्चात की गायों में से ही होना चाहिए, क्योंकि अधिकतम उत्पादन प्रथम पांच प्रजनन के दौरान होता है। बरसात के मौसम मे अच्छा हरा चारा उपलब्ध होता है और ज्यादातर पशु बरसात में या बरसात से पहले ही बच्चे को जन्म देते हैं। प्रतिदिन अधिकतम दूध उत्पादन पहुँचने में कम से कम 45 दिन लग जाते हैं। पशु का अधिकतम दूध उत्पादन प्रजनन के 90 दिनों तक नापा जाता है, जिसके चलते ज्यादातर किसान दुधारू पशु को अक्टूबर व नवंबर माह में खरीदना पसंद करते हैं। दुधारू गाय के चुनाव के लिए पशुपालक किसान को निम्न बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए :-

- उम्रदराज पशु की खरीद से बचने के लिए किसान को पशु की सही उम्र का आंकलन उसके दांतो व सीगों के आकार और शरीर की स्थिति द्वारा करना आना चाहिए, क्योंकि एक सही उम्र का पशु लम्बे समय तक उत्पादन के साथ-साथ ज्यादा वंशज पैदा करता है।
- खरीदा जाने वाला पशु उसकी नस्ल के सभी गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए तथा उसमें कोई विकृति नहीं होनी चाहिए। गाय को अच्छे कृषि फार्मों से ही खरीदना चाहिए तथा उसकी इतिहास और वंशावली (हिस्टरी व पेडिग्री शीट) को भी चुनाव में एक आधार बनाना चाहिए।
- गाय के सांड तथा मां की प्रजनन मूल्य (ब्रीडिंग वैल्यू) या उत्पादन क्षमता का पता होना चाहिए। अगर इतिहास और वंशावली का रिकार्ड उपलब्ध न हो तो पिछले मालिक से उसके पिछले सालों का उत्पादन तथा उसके पूर्वजों की उत्पादन क्षमता के बारे में जरूर पूछना चाहिए। खरीदी जाने वाली गाय के पूर्वज कुलीन होने चाहिए।
- गाय शारीरिक रूप से स्वस्थ और आज्ञाकारी होनी चाहिए। कोई एक विश्वसनीय आदमी को साथ में जरूर ले जाएं जो गाय से दूध निकालने में सक्षम हो और गाय को भी नियंत्रण में रख सके।
- मादा पशु के शरीर का आकार त्रिभुजनुमा होना चाहिए, जिसमें उसकी गर्दन पतली तथा शरीर का पिछला हिस्सा चौड़ा होना चाहिए। आकर्षक मादाजनित गुणों के साथ-साथ सभी अंगों में समानता व सांमजस्य होना चाहिए। पशु की आंखें व त्वचा चमकदार और मजल गीला होना चाहिए।

- पशु के थन पेट से सही तरीके से जुड़े हुए होने चाहिए। पशु के चारों थन अलग-अलग व चूचक सही होने चाहिए। थनैला रोग से ग्रस्त गाय की खरीद से बचने के लिए किसान को यह भी सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि थनों में किसी प्रकार की कोई सूजन नहीं होनी चाहिए और गाय का दूध निकालते समय पैर नहीं मारती हो। थनों की रक्त वाहिनियों की त्वचा पर बनावट सही होनी चाहिए, क्योंकि मिल्क वेन की बनावट दूध उत्पादन क्षमता को प्रदर्शित करती है।
- दूध उत्पादन मापन की शुरूआत करने से पहले सायंकाल में पशु किसान सम्बंधित गाय के थन खाली अपनी निगरानी में करवाएं तथा उसके बाद लगातार तीन दिन दूध निकाल कर प्रतिदिन की औसत के आधार पर उसकी दूध देने की क्षमता का आंकलन करना चाहिए।
- लंगड़ी गाय की खरीद से बचने के लिए किसान को ध्यान रखना चाहिए कि गाय खरीदते समय गाय को उठने, बैठने और चलने में दिक्कत नहीं हो। पशुपालक गाय खरीदते समय त्वचा सम्बन्धी रोगों से बचने के लिए ध्यान दें कि गाय दीवार या खुर द्वारा शरीर पर खुजली नहीं कर रही हो। किसान को नयी गाय अपने पशुओं के झुण्ड में शामिल करने के पहले यह भी ध्यान रखना चाहिए गाय के बाहरी परजीवी जैसे कि चीचड़ आदि ना हो।
- किसान को यह ध्यान रखना चाहिए कि गाय के किसी हिस्से पर मिट्टी तो नहीं लगी हुई, अगर मिट्टी लगी हुई हो तो उसे उतार के देखना चाहिए, क्योंकि मिट्टी का प्रयोग पशु के पुराने दाग या ज़ख्म को छुपाने के लिए प्रयोग करते हैं।
- गाय की कीमत उसकी नस्ल शुद्धता, शारीरिक गुणों तथा उत्पादन क्षमता के आधार पर निर्धारित करनी चाहिए।

सही नस्ल के चुनाव के लिए सुझाव

नये डेरी फार्म में आर्थिक स्थिति के अनुसार पशु होने चाहिए। व्यावसायिक डेरी शुरू करते समय 10 गाय के फार्म से शुरूआत की जा सकती है। इसके पश्चात् बाजार के आधार पर आगे बढ़ाने के बारे में सोचना चाहिए।

स्वास्थ्य के प्रति जागरूक मध्य वर्गीय भारतीय जनमानस सामान्यतः कम वसा वाला दूध ही लेना पसंद करते हैं इसके

चलते व्यावसायिक फार्म का मिश्रित स्वरूप उत्तम होता है। इसमें संकर नस्ल और देसी गायें एक ही छप्पर के नीचे अलग-अलग पंक्तियों में रखी जा सकती है। अच्छी नस्ल व गुणवत्ता की गाय की कीमत 3500 से 4000 रुपये प्रति लीटर होती है। उदाहरण के लिए 10 लीटर प्रतिदिन दूध देने वाली गाय की कीमत 35000 से 50000 रुपए तक की होगी।

भारतीय मौसम की परिस्थितियों में होलेस्टिन व जर्सी की संकर नस्ल सही दुग्ध उत्पादन के लिए उत्तम साबित हुई है। संकर नस्ल की गाय के दूध में वसा की मात्रा देशी गाय के दूध से कम होती है। दूध उत्पादन के लिए दुधारू नस्ल (साहिवाल, लाल सिंधी, गीर और थारपकर) या खेतों में हल चलाने व बैलगाड़ी खींचने के अनुरूप पशु जुताई वाली नस्ल (अमृतमहल, हल्लीकर और खिल्लार) या दोनों गुणों वाली नस्ल (हरियाणा, ओन्गोले, कंकरेज और देओनी) या विदेशी नस्ल (जर्सी या होल्स्टीन फेशियन) या विदेशी नस्लों के विभिन्न शंकर (फ्रिएस्वाल, कारन स्विस, करन फ्राइस और हरधेनु) उपलब्ध है। पशु किसान को अपनी जरूरत के अनुरूप, उपलब्धता, पर्यावरण के अनुरूप (जो स्थानीय गर्मी और सर्दी) तथा कीमत के आधार (पशुपालक की गाय खरीदने की क्षमता) पर गाय पालनी चाहिए जोकि उसकी अधिकतर आवश्यकताओं को पूरा करे। अपने पर्यावरण के अनुकूल पशु की नस्ल के बारे में अधिक जानकारी स्थानीय पशु चिकित्सक से संपर्क कर प्राप्त की जा सकती है। □□

पशु आनुवांशिकी एवं प्रजनन विभाग
लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार

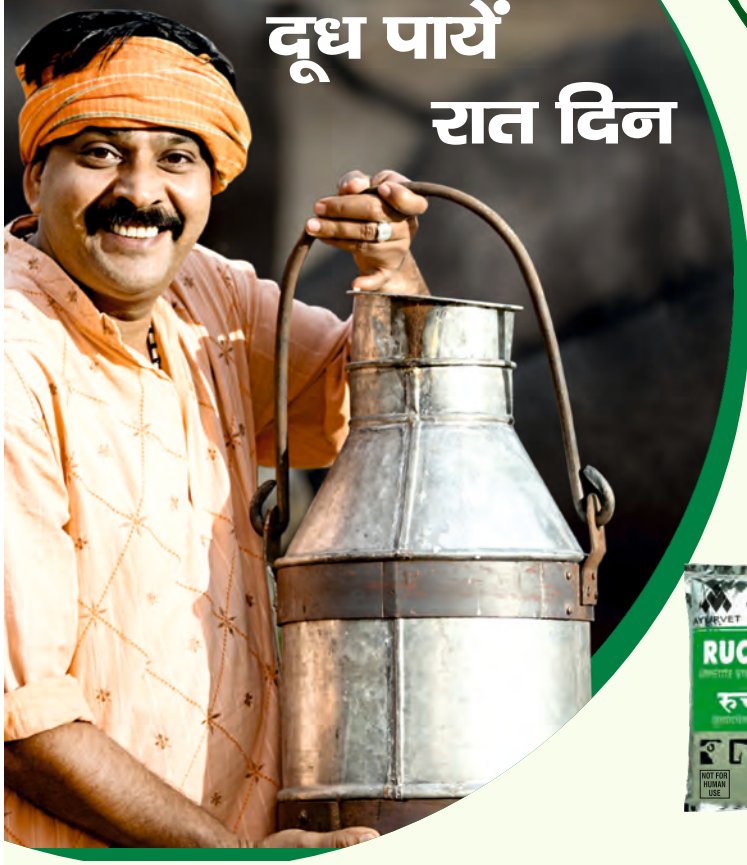

AYURVET
जब भी पशु करे
खाने में आनाकानी
रुचामैक्स
दूर करे परेशानी
महीने में दें
सात दिन
दूध पायें
रात दिन
AYURVEDIC VETERINARY MEDICINE
RUCHAMAX
APPETITE STIMULANT & DIGESTIVE TONIC
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
NOT FOR HUMAN USE
60g Net
15g Net
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
अधिक जानकारी के लिए
टोल फ्री नं० पर मिस्ड कॉल करें
97803 11444

गोबर भी बन सकता है आपकी कमाई का जरिया

सूखे हुये गोबर को खेत में फैलने से वह गोबर नहीं, बल्कि खेतों में बीमारी फैलाते हैं। इस तरह के गोबर से खेत में कीटों का प्रकोप बढ़ता है। जब आप गोबर को खुले आसमान में रखते है तथा महीनों उस पर एक के बाद एक परत गोबर की जमा करते जाते हैं, तो इसके कारण गोबर सूखता जाता है। खुले आसमान में रखने से गोबर में उजले रंग के कीड़े लग जाते हैं। यह कीड़े काफी संख्या में रहते हैं तथा ऊपर से दिखाई नहीं देते है।

किसान भाई आप सभी के घरों में गाय, भैंस तथा बैल रहते हैं, जब आपके घर में पशु हैं, तो यह निश्चित है, आपके घर पर गोबर होता होगा। इस गोबर को अक्सर किसान ईंधन के लिए उपयोग करते हैं, इसके साथ ही किसान गोबर को एक जगह एकत्रित करते हैं। जो किसान गोबर को ईंधन के रूप में प्रयोग करते हैं वह तो सही है, लेकिन जो किसान गोबर को एक जगह पर जमा करते हैं तथा महीनों बाद उस गोबर को अपने खेतों में डाल देते हैं। उस किसान को यह लगता है कि गोबर को वह खाद के रूप में प्रयोग करता है, लेकिन यह बात गलत है।

सूखे हुये गोबर को खेत में फैलने से वह गोबर नहीं, बल्कि खेतों में बीमारी फैलाते हैं। इस तरह के गोबर से खेत में कीटों का प्रकोप बढ़ता है। जब आप गोबर को खुले आसमान में रखते है तथा महीनों उस पर एक के बाद एक परत गोबर की जमा करते जाते हैं, तो इसके कारण गोबर सूखता जाता है। खुले आसमान में रखने से गोबर में उजले रंग के कीड़े लग जाते हैं। यह कीड़े काफी संख्या में रहते हैं तथा ऊपर से दिखाई नहीं देते है। इसे देखने के लिए कम से कम 6 से.मी. ऊपर से सूखे हुये गोबर को हटाना होगा। यह कीड़े फसल तथा मिट्टी दोनों के लिए नुकसानदायक है। इसलिए पशुओं के गोबर को खुले आसमान में महीनों नहीं रखे।

तो गोबर का क्या करें ?

यदि आप थोड़ी सी भी सावधानी बरते, तो गोबर का सही प्रयोग कर सकते हैं। अगर आप गोबर से केंचुआ खाद बनाते है, तब तो बहुत अच्छी बात है। जो किसान गोबर से केंचुआ खाद नहीं बना सकते हैं, तो उसे नीरस होने की जरुरत नहीं है। इसके लिए किसान को अपने गौशाला के पास एक गड्ढा खोदना होगा। अपने पशुओं की संख्या के आधार पर गड्ढे का आकार बड़ा या छोटा रख सकते हैं, लेकिन गड्ढे का आकार इस तरह रखे कि उसमें एक महीने का गोबर रखा जा सके। फिर दूसरे महीने के लिए दूसरा गड्ढा खोदना होगा।

जाने पूरी प्रक्रिया

उस गड्ढे को खोदने के बाद उसको ऊपर से लकड़ी रखकर मिट्टी से बंद कर दें या ढक दें। आप इसे इस तरह बंद करें कि बाहर से किसी भी तरह का कोई सम्पर्क नहीं हो सके। उसके बाद उस बंद गड्ढे में एक होल करें, यह होल लगभग 3 से 4 से. मी. का होना चाहिए। अब इस इस गड्ढे से गोबर को प्रत्येक 3 से 4 दिन के बाद डाले। साथ में 3:1 के अनुपात में पानी डालें यानि 3 किलोग्राम गोबर तो एक किलोग्राम पानी डालें। जब भी उस गड्ढे में गोबर डालें, उसके बाद उस होल को बंद कर दें। होल को इस तरह बंद करें कि उससे किसी भी तरह की गैस बाहर नहीं निकल सके। इस बात का ख्याल रखे कि पानी ज्यादा नहीं होना चाहिए, क्योंकि आपको गोबर गैस नहीं बनाना हैं। इस बात का भी ख्याल रखें कि ताजा गोबर को नहीं डालना है।

अब इसी तरह से 1 से 2 महीने तक गोबर और पानी डालते रहें। उसके बाद उस होल को बंद करके 1 महीने तक छोड़ दें या

तब तक छोड़ दें जबतक कि आपको जरूरत न हो। कुछ महीने के बाद आप पायेंगे की गोबर पूरी तरह से सड़ गया है तथा खाद के रूप में तैयार हो गया है। इस तरह से किसान भाई आप लोग कम खर्च में गोबर का सही प्रयोग कर सकते हैं, लेकिन आप सभी कभी भी अपने पशुओं का गोबर खुले में नहीं रखें।

घर पर करें तरल जैविक खाद का निर्माण

विभिन्न राज्यों के किसानों द्वारा अनेक प्रकार के तरल खाद प्रयोग किये जा रहे हैं। कुछ महत्वपूर्ण तथा वृहत रूप से प्रयोग किए जाने वाले सूत्रों का विवरण नीचे दिया जा रहा है :-

संजीवक

100 कि.ग्रा. गाय का गोबर+100 लीटर गौ–मूत्र तथा 500 ग्राम. गुड़ को 500 ली. क्षमता वाले ड्रम में 300 लीटर जल में मिलाकर 10 दिन हेतु सड़ने दें। 20 गुना पानी मिलाकर एक एकड़ क्षेत्र में मृदा पर स्प्रे करें अथवा सिंचाई जल के साथ प्रयोग करें।

जीवामृत

10 किलोग्राम गाय का गोबर +10 ली. गौ-मूत्र+ 2 किलोग्राम गुड़ तथा किसी दाल का आटा + 1 किलोग्राम जीवंत मृदा को 200 लीटर जल में मिलाकर 5 और 7 दिनों हेतु सड़ने दें। नियमित रूप से दिन में तीन बार मिश्रण को हिलाते रहें। एक एकड़ क्षेत्र में सिंचाई जल के साथ प्रयोग करें।

अमृत पानी

500 ग्राम शहद के साथ 10 किलो गाय के गोबर को मिलाकर तब तक फेंटे (एक लकड़ी की सहायता) जब तक वह लुगड़ी (पेस्ट) जैसा न हो जाये, इसके बाद इसमें 250 ग्राम गाय का देशी घी मिलाकर तेजी से मिलाये। इसे 200 लीटर पानी में मिलाकर घोल लें। इस घोल को एक एकड़ जमीन पर छिड़क दें या सिंचाई वाले पानी के साथ फैला दें। 30 दिनों के बाद दूसरी खुराक के रूप में पौधों की कतारों के बीच में छिड़के या सिंचाई वाले पानी के साथ फैला दें।

पंचगव्य

5 किलो गाय का गोबर, 3 लीटर गाय का दूध, दही दो लीटर, गाय के दूध से बना मक्खन एक किलो मिलाकर सात दिनों के लिए सड़ने को रख दें और दही दो लीटर, गाय के दूध से बना मक्खन एक किलो मिलाकर सात दिनों के लिए सड़ने को रख दें और इसे रोज दिन में दो बार हिलाते रहें। सात-आठ दिन में यह तैयार हो जायेगा। तीन लीटर पंचगव्य को 100 लीटर पानी में मिला लें और मृदा पर छिड़क दें। सिंचाई के पानी के साथ मिलाकर 20 लीटर पंचगव्य को प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करना चाहिये।

समृद्ध पंचगव्य (या दशगव्य)

आवश्यक चीजें-पांच किलो गाय का गोबर, तीन लीटर गोमूत्र, दो लीटर गाय का दूध, दही दो लीटर, एक किलो गाय का देशी घी, तीन लीटर गन्ने का रस, तीन लीटर कच्चे नारियल का पानी, 12 किले को मसलकर तैयार पेस्ट एवं ताड़ी या अंगूर का रस दो लीटर, एक पात्र में गाय का गोबर और देशी घी मिलाकर तीन दिनों तक सड़ने के लिए साथ रख दें। बीच-बीच में इसे हिलाते रहना जरुरी है। चौथे दिन उपरोक्त सभी चीजें इसमें

मिला दें और 15 दिनों के लिए (प्रतिदिन दो बार हिलाना जरुरी है) सड़ने को रख दें। 18 वें दिन यह तैयार हो जाएगा। गन्ने के रस के स्थान पर 500 ग्राम गुड 3 लीटर पानी के साथ मिलाकर उपयोग किया जा सकता है। या यीस्ट पाउडर को 100 ग्राम और गुड़ दो लीटर गरम पानी के साथ मिलाकर उपयोग कर सकते है। छिड़काव हेतु 3 से 4 दशागाव्य को 100 लीटर पानी में मिला लें। मृदा (मिट्टी) में डालने हेतु 50 लीटर पंचगव्य एक हैक्टेयर के लिए पर्याप्त है। इसे बीजोपचार हेतु भी उपयोग किया जा सकता है। □□

पशुओं मे सर्रा रोग

उपचार व बचाव

-डा प्रियंका

कभी आर्टिफीशियल इंसेमिनेशन (एआई) की तकनीक ने एनिमल ब्रीडिंग का परिदृश्य ही बदल दिया था, उसी तरह आने वाले समय में ईटीटी और सेक्सड सीमन टेक्नोलॉजी भी एनिमल ब्रीडिंग के क्षेत्र में गेम चेंजर साबित होगी। आज महँगी और जटिल लगने वाली ये टेक्नोलॉजी कल एआई की तरह ही एनिमल ब्रीडिंग का रोजमर्रा का हिस्सा होंगी।

सर्रा पशुओं की एक घातक बीमारी है। इसे ट्रिपैनोसोमिएसिस, अफ्रीकन निंद्रा रोग, पेठारोग, दुबला रोग, पुराना रोग, तिब्रसा और गुजरात मे नृत्य मक्खी नो रॉग, चक्रनो रॉग के नाम से भी जाना जाता है।

ऊंट में इस बीमारी का कोर्स 3 साल का होने के कारण इसे तिबरसा भी कहा जाता है। इस रोग मे पशु को अतितीव्र बुखार के साथ- साथ अधांपन भी हो जाता है। यह रोग भारत, आस्ट्रेलिया व अफ्रीका देशों में देखने को मिलता है।

कारण

यह रोग एक रक्त परजीवी (प्रोटोजोआ) 'ट्रिपैनोसोमा' के कारण उत्पन्न होता है। यह विभिन्न प्रकार की मक्खियों जैसे सी-सी, टेबेनस और स्टोमोक्सिस के काटने से एक पशु से दूसरे पशु में फैलता है।

प्रभावित पशु

यह रोग गाय, भैंस, अश्व, भेड़, बकरी, कुत्ता, ऊंट व हाथी में देखने को मिलता है।

लक्षण

तेज बुखार या सामान्य से कम तापमान, तेज उत्तेजना, सिर को दीवार या जमीन आदि से दबाना, कांपना या थरथराना, छटपटाना या मूर्छित सा होना, पेशाब बार-बार व थोड़ा-थोड़ा करना, मुंह से लार बहना/टपकना, जुगाली न करना, खाना-पीना छोड़ देना। गोलाई में चक्कर लगाना, गले मे बंधी हुई रस्सी या जंजीर को खींच कर रखना, गिर जाने पर उठ न पाना या बैठ जाने पर उठ न पाना, लगातार कमजोर होते जाना, खांसी करना। 14-21 दिनों में मृत्यु या कभी-कभी ऐसे लक्षण रोगी पशु मे 2-4 महीने तक भी देखे गये हैं।

कुछ पशुओं में आँखें लाल हो जाती हैं। कई पशुओं में खाना-पीना ठीक-ठाक होता है, लेकिन दिन-प्रतिदिन कमजोर होते चले जाते हैं। ऐसे पशुओं में आँख की पुतलियाँ सफेद एवं पीली होनी शुरू हो जाती हैं और आँख की नेत्र श्लेष्मा पर लाल रंग के धब्बे पड़ने शुरू हो जाते हैं।

ऐसे पशुओं में बुखार कभी हो जाता है। अपने आप ही ठीक भी हो जाता है। उनका खून पतला हो जाता है। कुछ

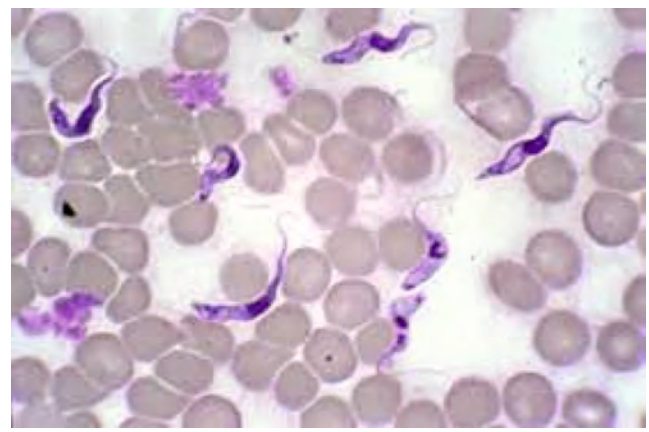

पशुओं में शरीर के निचले हिस्सों (जैसे कि टांगें, गला, छाती पेट के निचले हिस्से) में सूजन आ जाती है। कई बार पशु में दौरा पड़ने पर तेज कंपकपाहट होती है, पशु अचानक गिर जाता है और कुछ समय मे ही पशु की मृत्यु तक हो जाती है। यदि ऐसे पशुओं का इलाज नही होता है, तो उनकी मृत्यु हो जाती है।

उपचार

Quinapyramines (Antrycide प्रोसाल्ट, Triquin आदि) सामान्य रूप से क्विनैप्रैमाइन मेथाइलसल्फेट (1.5 ग्राम) और क्विनैप्रैमीन मिथाइलक्लोराइड (1.0 ग्राम) के मिश्रण में उपलब्ध क्विनैप्रैरामिन प्रोसाल्ट के साथ 2.5 ग्राम के रूप में उपलब्ध है। यह दवा 3.0 मिली ग्राम से 5.0 मिलीग्राम / किलोग्राम शरीर के वजन पर चमडी के नीचे दी जाती है।

डिमिनेजिन एसिटुरेट (बेरनेल) को 3.5 मिली ग्राम से 5.0 मिलीग्राम/किग्रा गहरा इंट्रामस्क्यूलर इंजेक्शन के रूप में उपयोग किया जाता है।

आईसोमेटामेडियम(समोरिन) का उपयोग 0.75 मिलीग्राम/किलोग्राम शरीर वजन पर इंट्रामस्क्यूलर इंजेक्शन के रूप मे उपयोग किया जाता है।

बचाव

बचाव दवाओं के उपयोग से सर्रा को रोका जा सकता है।

- वर्तमान में मवेशियों के लिए प्रयुक्त बचावी/ प्रोफाइलैक्टिक दवा क्विनैप्रैरामिन प्रोसाल्ट हैं। पशुओं में ठीक से इंजेक्शन देने के बाद, ये दवा आम तौर पर तीन महीने की सुरक्षा प्रदान कर सकती हैं।
- एक और महत्वपूर्ण व प्रभावी नियंत्रण विधि मक्खियों को खत्म करने के लिए है। सी-सी मक्खियों को नियंत्रित करने के लिए उनके वास स्थान पर कीटनाशक छिड़काव करना आवश्यक है।

□□

पशुचिकित्सक, पशुपालन एवं डेयरी विभाग, हरियाणा
Email: Priyankaduggal48@gmail-com

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के सजिल्द अंक उपलब्ध

हमारे बहुत से पाठक आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के अंकों को संजोकर रखते हैं, लेकिन कई बार उनसे वह अंक छूट जाते हैं। इसके अलावा, बहुत से ऐसे लोग हैं, जो आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के वर्ष 2017 के 12 अंक प्राप्त करना चाहते हैं। उनके लिए खुशखबरी यह है कि इस वर्ष यानि वर्ष 2017 के सभी अंक बाइंड कर सजिल्द उपलब्ध करवाएं जा रहे हैं। इसके अलावा, वर्ष 2016 के सजिल्द अंकों की भी कुछ प्रतियां उपलब्ध हैं। चूंकि इसकी प्रतियां सीमित हैं अत: आपसे अनुरोध है कि अपनी प्रति जल्द से जल्द बुक करवाएं। एक सजिल्द प्रति की कीमत 400/- रुपए (डाक खर्च अलग) है। राशि ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली के नाम भिजवाएं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-

दूरभाष: 91-120-7100201

AYURVET™

AGES™ ALTERNATIVE GREEN ENERGY SOLUTIONS

ARF AYURVET RESEARCH FOUNDATION

किसान भाइयों के लिए खुशखबरी

धान की नर्सरी

गन्ने की नर्सरी

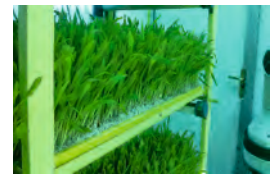

हरा चारा

अब खरीदें और पाएं सब्सिडी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: 09467806280

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स
तकनीक एक, लाभ अनेक

पौधे को उगाने के लिए सामान्यतः बीज को मिट्टी में डाला जाता है, जबकि हाइड्रोपोनिक्स तकनीक में पौधे को बिना मिट्टी के उगाया जाता है। मिट्टी पौधों के लिए पोषक पदार्थों के संवाहक का काम करती है, लेकिन मिट्टी पौधे की वृद्धि के लिए स्वयं जरूरी नहीं होती। यदि पौधों को जरूरी तत्व पानी में घोलकर दें, तो पौधों की जड़ें उन्हें प्रयोग करने में सक्षम होती हैं एवं पौधों की वृद्धि सामान्य रहती है।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के लाभ

- इस तकनीक में जमीन एवं पानी की बहुत कम जरूरत पड़ती है।
- इस विधि में वातावरणीय प्रदूषण भी घट जाता है, क्योंकि पोषक तत्वों का उपयोग पूरी तरह होता है।
- पौधों में कीड़े और बीमारियां लगने की संभावना कम-से-कम होती है, क्योंकि इस विधि में पौधों का विकास नियंत्रित वातावरण में होता है।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक आने वाले समय की जरूरत बनने वाली है क्योंकि बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ फसलों का बढ़ता उत्पादन हमारी प्राथमिकता है।
- आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक को आयुर्वेट के वैज्ञानिकों द्वारा निरंतर आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है और उन्हें इसके अनुकूल परिणाम भी मिल रहे हैं।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के उपयोग

- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से धान की नर्सरी तैयार करना।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से साग-सब्जी के पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से औषधीय व मसाले वाले पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से हरे चारे का उत्पादन।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से व्हीट ग्रास का उत्पादन।

कराएं 225 रुपए में

40 हजार तक की गाय-भैंस का बीमा

पशुपालक को सबसे ज्यादा नुकसान तब होता है, जब पशु को कोई गंभीर बीमारी या आकस्मिक घटना से उसकी अचानक मौत हो जाती है। अगर पशुपालक ने अपने पशुओं का बीमा कराया है, तो वह आर्थिक नुकसान से बच सकता है। हम जिस तरह से अपनी मोटर साइकिल और कार का बीमा कराकर अपने वाहन की सुरक्षा करते है। ठीक वैसे ही पशुओं का बीमा कराकर पशुपालक आर्थिक नुकसान से बच सकते हैं। जब पशुपालक अपने पशु को खरीद कर लाता है, तभी उसका बीमा करा लेना चाहिए।

आज भी ज्यादातर पशुपालक अपने पशुओं का बीमा कराने में दिलचस्पी नहीं दिखाते हैं। इस से पशुओं के बीमार पड़ने, बाढ़ में बहने या उन के मरने पर पशुपालकों को काफी नुकसान उठाना पड़ता है। महंगे और दुधारू पशुओं का बीमा करा कर पशुपालक बड़े नुकसान की भरपाई आसानी से कर सकते हैं। किसानों और पशुपालकों को राहत देने के लिए साल 1973 में पशुबीमा योजना की शुरुआत की गई थी, पर इस के 43 सालों बाद भी पशुपालक पशुबीमा के फायदों को नहीं समझ सके हैं।

पशुपालक को सबसे ज्यादा नुकसान तब होता है, जब पशु को कोई गंभीर बीमारी या आकस्मिक घटना से उसकी अचानक मौत हो जाती है। अगर पशुपालक ने अपने पशुओं का बीमा कराया है, तो वह आर्थिक नुकसान से बच सकता है।

हम जिस तरह से अपनी मोटर साइकिल और कार का

बीमा कराकर अपने वाहन की सुरक्षा करते है। ठीक वैसे ही पशुओं का बीमा कराकर पशुपालक आर्थिक नुकसान से बच सकते हैं। जब पशुपालक अपने पशु को खरीद कर लाता है, तभी उसका बीमा करा लेना चाहिए।

किन-किन पशुओं का हो सकता है बीमा

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी के मैनेजर रहे इंश्योरेंस एक्सपर्ट आरके सिन्हा बताते हैं कि बीमा कराने से पहले यह जानना जरूरी है कि किन-किन पशुओं का बीमा कराया जा सकता है और उस के लिए कितनी रकम प्रीमियम के रूप में देनी होगी। देशी और संकर नस्ल की दुधारू गाय या भैंस, बछड़ा या बछिया, प्रजनन क्षमता वाले सांड़ व बैलों का बीमा कराया जा सकता है। 2 से 10 साल की उम्र की दुधारू गायों, 3 से 12 साल की दुधारू भैंसों, 2 से 8 साल के प्रजनन क्षमता वाले सांड़ों, 2 से 12 साल के बैलों या भैंसों और 4 महीने से लेकर पहला बच्चा देने लायक बछिया या बछड़ों का बीमा किया जा

जरा ध्यान दें

- स्वस्थ पशु का ही बीमा होगा। पहले से कोई गंभीर बीमारी है, तो बीमा नहीं होगा।
- बीमा का फायदा लेने के लिए फार्म को सही और पूरा भरें।
- सड़क दुर्घटना में पशु की मौत हो, तो तुरंत थाने में रिपोर्ट लिखवाएं और बीमा कंपनी को सूचित करें।
- पशु के कान में लगे टैग को हमेशा चेक करते रहें।
- टैग का नंबर किसी डायरी या कापी में नोट कर के रखें और इस के खोने पर बीमा कंपनी को बताएं।
- अगर पशु सुस्त पड़ जाए या खाना छोड़ दे या किसी बीमारी का लक्षण दिखाई दे, तो तुरंत बीमा कंपनी को खबर करें।
- पशु को बेचने या उस के स्थान बदलने की जानकारी बीमा कंपनी को दें।
- पशुओं को सभी जरूरी टीके समय पर लगवाएं।
- पशु बीमा होने के बाद किसी कारणवश पशु की मृत्यु हो जाए तो मुआवजे के लिए इंशोरेंस कंपनी या पशुचिकित्सक को भी संपर्क कर सकते है।
- पशु का मृत्यु प्रमाण पत्र पशुचिकित्सक देता है।
- पशु की मृत्यु के 24 घंटे के अंदर पशुचिकित्सक या कंपनी को सूचित करे।
- पशु के कान में लगा टैग न हटाएं।
- क्लेम लेने के लिए कंपनी क्लेम फार्म देती है, जिसे भरकर मृत्यु प्रमाण पत्र और पोस्टमार्टम रिपोर्ट(शव परीक्षा प्रतिवेदन) लगाकर पशुपालक धनराशि ले सकते है।

सकता है। नस्ल, क्षेत्र और समय के आधार पर सौ फीसदी बाजार मूल्य को बीमित राशि माना जाता है। बीमा राशि की मंजूरी के लिए पशुचिकित्सक की रजामंदी जरूरी होती है।

इस के बाद बीमा कराने से पहले पशुपालकों को यह समझ लेना चाहिए कि किस पशु का बीमा कराने पर कितनी रकम

प्रीमियम के तौर पर जमा करनी होगी। दुधारू गायों या भैंसों की कुल बीमा की रकम का 5 फीसदी सालाना प्रीमियम के रूप में जमा करना होता है। प्रजनन कूवत वाले सांड़ों और बैलों के लिए कुल बीमा की रकम का 2.75 फीसदी प्रीमियम के रूप में देना होता है। अगर कोई किसान बीमा एजेंट से बीमा कराने के बजाय खुद बीमा दफ्तर में जा कर पशुओं का बीमा कराए, तो उसे मूल प्रीमियम में 15 फीसदी की छूट मिल सकती है।

बीमा लाभ कब मिलेगा, कब नहीं

इन सब के बाद यह समझना जरूरी है कि किस हालत में बीमा का फायदा मिलेगा और कब नहीं मिलेगा? बाढ़, आंधी, तूफान, सूखा, अकाल या किसी बीमारी से पशु की मौत होने पर पशुपालकों को बीमा का फायदा मिलता है। बीमा कराने के 15 दिनों के भीतर पशु की मौत होने पर बीमा कंपनी नुकसान की भरपाई नहीं करती है। अगर यह साबित हो जाए कि पशु को जानबूझ का मार दिया गया है या देखभाल में ढिलाई की गई है या उसे चोरीछिपे बेच दिया गया है, तो बीमा का फायदा नहीं मिलता है।

बीमा कराए गए पशु के कान में पीतल का नंबर दिया हुआ बटननुमा टैग लगा दिया जाता है। टैग के गिरने पर तुरंत बीमा कंपनी को जानकारी देना जरूरी है। पशु के मरने या बीमार पड़ने पर नुकसान की भरपाई का लाभ लेने के लिए बीमा कंपनी द्वारा तय पशुचिकित्सक से सार्टिफिकेट ले लेना चाहिए।

उत्तर प्रदेश पशुपालन विभाग के उपनिदेशक डॉ अरविंद कुमार सिंह ने बताया कि भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग उत्तर प्रदेश पशुधन विकास परिषद् के माध्यम से पूरे प्रदेश में पशुधन बीमा योजना चलाई जा रही है, जिसके तहत कोई भी पशुपालक अपने पशुओं का बीमा करा सकते है।

कितने देनी होगी बीमा करवाने की राशि

पशुधन बीमा योजना के तहत अगर आपके पास चालीस हजार रुपए तक की गाय या भैंस है, तो उसका एक साल का बीमा कराने के लिए सामान्य वर्ग को केवल 225 रुपए देने होंगे और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को केवल 90 रुपए देने होंगे।

इस पशुधन बीमा योजना में 50 फीसदी प्रीमियम केंद्र सरकार, 25 फीसदी राज्य सरकार और बाकी का 25 फीसदी लाभार्थी को देना होता है। यानी बहुत कम हिस्सा पशुपालकों को देना होता है और वह जोखिम से बच सकता है।

कितने साल तक हो सकता है बीमा

पशुधन बीमा योजना में पशुओं का एक साल और तीन साल तक का बीमा कराया जाता है। अगर कोई पशुपालक तीन साल तक का पशुधन बीमा कराना चाहता है, तो 40 हजार तक की गाय-भैंस के लिए सामान्य वर्ग के पशुपालक को 614 रुपए और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्ग के पशुपालकों को 245 रुपए देने है।

पशु का बीमा होने पर उसको टैग लगाया जाता है, ताकि उसकी पहचान हो सके। अगर पशु की मौत हो जाती है, तो वो टैग धनराशि दिलाने में भी मदद करता है। एक परिवार कम से कम पांच बड़े पशुओं और छोटे पशुओं के एक यूनिट (10 बकरी या 10 भेड़) का बीमा करा सकते है।

बीमा कराने की प्रक्रिया

अगर कोई पशुपालक अपने पशुओं का बीमा कराना चाहता है, तो वो अपने नजदीकी पशुचिकित्सालय मे संपर्क कर सकता है। क्योंकि डॉक्टर के निरीक्षण के बाद ही पशुओं का बीमा संभव है। इसके साथ ही मुख्य पशुचिकित्साधिकारी से भी संपर्क कर सकता है।

जानकारी के अभाव में घट रहा है पशु बीमा का दायरा

सरकार ने गरीब पशुपालकों को उनके पशु की मौत पर बीमा देने के लिए पशुधन बीमा योजना शुरू की है, पर इस बीमा का लाभ कैसे मिल सकता है, इसकी जानकारी पशुपालकों को नहीं है। इसीलिए गाँवों में लोग अब बहुत कम पशु बीमा करवाते हैं। इसका मुख्य कारण है बीमा कंपनी का कम धनराशि का बीमा करना। बीमा कंपनी ज़्यादा से ज़्यादा 30 या 35 हज़ार तक का बीमा करती है, पर अच्छी दुधारू भैंस या गाय की कीमत 50 से 60 हज़ार है। एक ओर जहां पशु बीमा को लेकर ग्रामीण पशुपालकों में जागरूकता का अभाव है, वहीं दूसरी तरफ बीमा कंपनियों की लापरवाही भी योजना के विकास में बड़ा रोड़ा बनी हुई है। पशु की मृत्यु हो जाने पर बीमा

कंपनी सम्बंधित पशु का सर्वे कर लेने के बाद ही भुगतान राशि जारी करती है। कई बार सर्वे करने में दो से तीन दिन लग जाते हैं। कोई भी पशुपालक मरे हुए जानवर को अपने पास इतने समय नहीं रख सकता है। ऐसे में वो अपने पशु को बिना सर्वे कराए ही उसे दफना या जला देता है। इस स्थिति में पशुपालक को बीमा का भुगतान नहीं मिलता है। बीमा करवाते समय कंपनी पशु के कान में टैग लगाती है। पशुपालक अपने पशुओं को खुले चरागाहों में चरने के लिए छोड़ देते हैं। इससे कई बार उनके कान में लगा टैग कहीं गिर जाता है। टैग न होने पर क्लेम का दावा रद्द कर दिया जाता है और किसान को बीमा की राशि से वंचित होना पड़ता है। □□

-आयुर्वेट डेस्क

एक्सापार
प्रसव पश्चात् गर्भाशय की सफाई एवं पुनः गाभिन बनाने हेतु
AYURVET
ब्याने के बाद की समस्याओं का अत्यंत प्रभावकारी उपाय
गर्भाशय के संक्रमण से बचाए एवं संपूर्ण सफाई करे
गर्भाशय के संकुचन द्वारा जेर गिराने में सहायक
गर्भाशय को समयानुसार पुनः स्थापित करे
रीपिट ब्रीडिंग एवं बांझपन की समस्या से बचाए
ब्याने के बाद समयानुसार अगले गर्भधारण के लिए तैयार करे
AYURVEDIC VETERINARY MEDICINE
EXAPAR
LIQUID
UTERINE CLEANSER & RESTORATIVE
एक्सापार
द्रव
1 लीटर बोतल
500 मि.ली. पैट बोतल
4 बोलस की एक स्ट्रिप

पशुचिकित्सक से जुड़े सवाल

आप पूछे विशेषज्ञ बताएं

इस स्तंभ के अंतर्गत आपके सवाल होंगे तो हमारे विशेषज्ञ के जवाब, हमें पत्र लिखें। आपसे अनुरोध है कि पत्र टाइप किया हुआ अथवा साफ-साफ लिखा हो। पहले अपना नाम लिखिए, पता लिखिए और फिर लिखिए सवाल हां, अपनी फोटो भी भेज सकते हैं। हमारे इस बार के विशेषज्ञ हैं डॉ. पी. के. श्रीवास्तव, वरिष्ठ पशुचिकित्सक।

डॉ. पी.के. श्रीवास्तव
वरिष्ठ पशुचिकित्सक

प्र. मेरी गाय की प्रसूति दो दिन पहले हुई है। उसके दो थनों से दूध नहीं आ रहा है । थन में कोई गांठ भी नहीं है। थन सख्त भी नहीं हैं क्या करें? राजेश, सोनीपत

उ. आप अपने पशु का परीक्षण पशु चिकित्सा अधिकारी से अतिशीघ्र करवाएं। इनका परीक्षण करने के बाद पता चलेगा कि क्या इन थनों में दूध बन रहा है, परंतु निकल नहीं रहा है या किसी कारणवश इन थनों में दूध बन ही नहीं रहा है। अगर दूध बन नहीं रहा है, तो शायद इस ब्यांत में आपका पशु केवल दो थनों से ही दूध देगा। हां अगर दूध बन रहा है, परंतु निकल नहीं रहा है, तो इनका आपरेशन करके इनमें पाइप डालकर इनको चालू किया जाएगा। इन पाइपों को थनों में 5-7 दिन तक रखा जाएगा व थन ठीक होने पर निकाल लिया जाएगा। आप अतिशीघ्र अपने पशु चिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर अपने पशु का परीक्षण करवाएं, क्योंकि कोई भी देरी इन थनों को सदा के लिए खराब कर सकती है।

प्र. मेरी 23 महीने की बछड़ी 7 महीने की गाभिन है। उसको क्या खिलाएं? अजीत, गाजियाबाद

उ. अभी आप अपनी बछड़ी को पेट के कीड़ों की दवाई दें। पशु आहार एक किलो सुबह व शाम खिलाएं। नौवां महीना शुरू होने पर उसे आहार बंद कर दलिया खिलाएं। हरा घास व सूखा घास मिलाकर खिलाएं। आयुमिन वी-5 (खनिज मिश्रण) 50 ग्राम ताउम्र खिलाएं। उसे सुबह व शाम 1/2-1 घंटा घुमाएं।

प्र. मेरी भैंस आठ महीने की गाभिन है। क्या उसे पेट के कीड़ों की दवाई दे सकते हैं? उसके बच्चे को पेट के कीड़ों की दवाई कब देनी चाहिए? जितेश, गुड़गांव

उ. गाभिन पशु को प्रसूति से दो महीने पहले पेट के कीड़ों की दवाई अवश्य देनी चाहिए। यह वह समय होता है, जब अगर मां के पेट में कीड़े हों तो वे खून से बच्चे में चले जाते हैं। अगर मां के पेट में कीड़े हों तो वह अंडे कीड़ (खीस) में भी आते हैं और बच्चे के पेट में चले जाते हैं। आप अपने पशु चिकित्सा अधिकारी से लिखवाकर अपने पशु को पेट के कीड़ों की दवाई दें। ध्यान रखें कि साल में चार बार अपने पशु को पेट के कीड़ों की दवाई अवश्य खिलाएं। जहां तक उसके बच्चे की बात है उसे 15 दिन की उम्र में पेट के कीड़ों की खुराक दें। पहले छः महीने की उम्र तक उसे हर माह पेट के कीड़ों की खुराक दें। सात माह से एक साल तक उसे हर दो महीने में पेट के कीड़ों की खुराक दें। एक साल की उम्र के बाद उसे हर तीन महीने के बाद पेट के कीड़ों की दवाई दें अर्थात साल में चार बार पेट के कीड़ों की दवाई दें।

प्र. पशु के कृत्रिम गर्भाधान को 2 1/2 महीने हो गए हैं ऐसा परीक्षण/टेस्ट बताएं, जिससे उसके गाभिन होने का पता लग जाए? मनीष, पानीपत

उ. कृत्रिम गर्भाधान के अढ़ाई-तीन माह बाद पशु गुदा में हाथ डाल जांच करके 100 प्रतिशत पता लग जाता है कि पशु गाभिन है कि नहीं। इसके लिए पशु की निकटतम पशु चिकित्सालय में जांच करवाएं। अभी तक कोई ऐसा परीक्षण नहीं है, जिससे पशु के गाभिन होने का पता लग सके। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, डेनमार्क आदि में कृत्रिम गर्भाधान करवाने के 20 दिन बाद दूध का स्ट्रीप टेस्ट करके पशु के गर्भ के बारे में पता चल जाता है, परंतु अभी यह भारत में उपलब्ध नहीं है। □□

आयुर्वेट पशु स्वास्थ्य संसार

खोज खबर

उ.प्र. में दो दर्जन से ज्यादा चीनी मिलों की पेराई आरंभ, एसएपी तय न होने की किसान में असमंजस

उत्तर प्रदेश में 30 से ज्यादा चीनी मिलों ने गन्ने की पेराई तो आरंभ कर दी है, लेकिन अभी तक राज्य सरकार ने गन्ने का राज्य समर्थित मूल्य (एसएपी) भी तय नहीं किया है, जिस कारण किसानों में असमंजस की स्थिति बनी हुई है। पिछले पेराई सीजन का भी राज्य की चीनी मिलों पर 7,000 करोड़ रुपये से ज्यादा का बकाया बचा हुआ है।

राज्य के चीनी उद्योग एवं गन्ना विकास विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि राज्य में करीब 30 चीनी मिलों ने पेराई आरंभ कर दी है तथा चालू सप्ताह में दर्जनभर से ज्यादा मिलों में और पेराई आरंभ हो जायेगी। अक्टूबर 2018 से शुरू हुए चालू पेराई सीजन 2018-19 (अक्टूबर से सितंबर) के लिए गन्ने का एसएपी चालू सप्ताह में घोषित किए जाने की उम्मीद है। बीते पेराई सीजन के लिए राज्य सरकार ने गन्ने की अगैती प्रजाति के लिए एसएपी 325 रुपये और सामान्य प्रजाति के लिए 315 रुपये प्रति क्विंटल तय किया था तथा पिछले साल एसएपी में 10 रुपये प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी की गई थी। चालू सीजन में राज्य में गन्ने की फसल पिछले साल से ज्यादा है, इसलिए चीनी का उत्पादन भी बढ़कर 125 लाख टन होने का अनुमान है।

गुजरात के कई जिलों में सूखे जैसे हालात

गुजरात के कई जिलों में मानसूनी बारिश सामान्य से कम होने से किसानों को भारी नुकसान होने की आशंका है। खेतों में नमी की मात्रा कम होने के कारण किसान फसलों की बुवाई नहीं कर पा रहे हैं, यही कारण है कि राज्य में रबी फसलों की बुवाई पिछले साल की तुलना में 47.07 फीसदी पीछे चल रही है। दलहन, तिलहन और मोटे अनाजों के अलावा मसालें एवं सब्जियों की बुवाई में भी कमी आई है।

राज्य के कृषि निदेशालय के अनुसार मानसूनी सीजन में राज्य में सामान्य से 24 फीसदी कम बारिश हुई थी। राज्य में अभी तक केवल 4.51 लाख हेक्टेयर में ही रबी फसलों की बुवाई हो पाई है। गेहूं की बुवाई चालू रबी में राज्य में अभी तक केवल 23,100 हेक्टेयर, मोटे अनाजों की बुवाई 57,100 हेक्टेयर एवं मक्का की बुवाई पिछले साल के 37,100 हेक्टेयर से घटकर अभी तक केवल 18,100 हेक्टेयर में ही हो पाई है। हालांकि ज्वार की बुवाई जरुर पिछले साल की तुलना में आगे चल रही है।

दालों की बुवाई चालू रबी सीजन में राज्य में 55,600 हेक्टेयर, चना की बुवाई 45,400 हेक्टेयर, तिलहन की बुवाई 1.06 लाख हेक्टैयर और मसालों में जीरा और धनिया की बुवाई चालू रबी में घटकर क्रमशः 18,400 और 700 हेक्टेयर में ही हो पाई है। प्याज और आलू की बुवाई भी घटकर क्रमशः 3,400 और 3,200 हेक्टेयर में ही हुई है।

धान की सरकारी खरीद 196 लाख टन के पार

चालू खरीफ विपणन सीजन 2018-19 में न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर 196.88 लाख टन धान की खरीद हो चुकी है, जबकि उत्पादक मंडियों में 209.60 लाख टन धान की आवक

हुई है। भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के अनुसार अभी तक हुई कुल खरीद में पंजाब की हिस्सेदारी 129.50 लाख टन और हरियाणा की 56.41 लाख टन की है। अन्य राज्यों में तेलंगाना से 7.61 लाख टन, चंडीगढ़ से 18,669 टन, गुजरात से 1,533 टन, जम्मू-कश्मीर से 2,156 टन, केरल से 48,460 टन, महाराष्ट्र से 1,364 टन, तमिलनाडु से 1.29 लाख टन और उत्तर प्रदेश से 22,443 टन तथा उत्तराखंड से 1.10 लाख टन धान की खरीद समर्थन मूल्य पर हुई है।

एफसीआई के अनुसार चालू खरीफ विपणन सीजन 2018-19 में चावल की खरीद का लक्ष्य 370 लाख टन का तय किया हुआ है जबकि पिछले खरीफ विपणन सीजन में 381.85 लाख टन चावल की खरीद समर्थन मूल्य पर हुई थी।

एशिया में कृषि बीज के प्रमुख केंद्र के रूप में उभर रहा है भारत : रिपोर्ट

भारत एशिया में एक प्रमुख बीज केंद्र के रूप में उभर रहा है। एक ताजा अध्ययन में यह बात सामने आई है कि 24 प्रमुख बीज कंपनियों में से 18 ने भारत में बीजों के विकास और उत्पादन गतिविधियों में निवेश किया है।

पीटीआई न्यूज एजेंसी के अनुसार वैश्विक और स्थानीय बीज कंपनियां भारत में भारी मात्रा में निवेश कर रही हैं, ताकि छोटी कृषि जोत वाले किसानों के लिए फसल उत्पादकता बढ़ाई जा सके। वर्ल्ड बेंचमार्किंग अलायंस (डब्ल्यूबीए) द्वारा प्रकाशित एक्सेस टु सीड्स इंडेक्स (एएसआई) में कहा गया है कि भारत में करीब 10 करोड़ किसान ऐसे हैं, जिनके पास छोटी कृषि जोत हैं। अध्ययन में कहा गया है कि इस क्षेत्र की 24 प्रमुख बीज कंपनियों के आंकलन से पता चलता है कि इनमें से 21 कंपनियां भारत में बीज बेचती हैं तथा 18 कंपनियों ने भारत में नए बीजों के विकास और उत्पादन गतिविधियों में निवेश किया है। इसकी तुलना में मात्र 11 कंपनियों ने ही थाइलैंड में बीज के विकास और उत्पादन गतिविधियों में निवेश किया है, जबकि आठ कंपनियों ने इंडोनेशिया में निवेश किया है। यह दोनों देश अन्य प्रमुख क्षेत्रीय बीज केंद्र हैं। इंडेक्स की पहली बार जारी रैंकिंग में चार भारतीय कंपनियों एडवांटा, एक्सेन हाइवेज, नामधारी सीड्स ओर न्यूजीवेदु सीड्स दक्षिण और दक्षिणपूर्व एशिया की शीर्ष दस कंपनियों में शामिल हैं। यह रैंकिंग छोटी जोत वाले किसानों को उत्पादकता में मदद देने के प्रयासों के आधार पर तैयार की गई है। इस सूची में शीर्ष पर थाइलैंड की ईस्ट वेस्ट सीड है।

पशु संजीवनी सेवा

सरकार ने में पशु संजीवनी सेवा शुरू करने का निर्णय लिया है, जिसके अन्तर्गत पशुपालकों को मोबाइल पशु चिकित्सा क्लिनिक्स के माध्यम से निशुल्क गुणवत्तापरक चिकित्सा सेवाएं और स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं उनके घर-द्वार पर पशुधन के लिए उपलब्ध करवाई जाएंगी। प्रारम्भ में, इस सेवा को तीन जिलों नामतः जींद, यमुनानगर और नूंह के सभी खण्डों में आरम्भ किया जाएगा।

पायलट आधार पर चलाई गई योजना की सफलता के उपरांत इस योजना को अन्य जिलों में भी शुरू किया जाएगा। मोबाइल पशु चिकित्सा सेवाओं को सार्वजनिक निजी भागीदारिता (पीपीपी) मोड में प्रदेश के अनकवर्ड, स्टाफ की कमी वाले और दूर-दराज के क्षेत्रों में शुरू किया जाएगा। यह योजना न केवल पशुधन को तुरंत आपातिक चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने में सहायक होगी, बल्कि नीम-हकीमों की गतिविधियों पर भी अंकुश लगाएगी।

पशुपालक टोल फ्री नम्बर 1962 पर फोन करने के उपरांत 24 घण्टे मोबाइल चिकित्सा क्लिनिक की सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे। इन तीनों जिलों के प्रत्येक खण्ड की सेवा में एक मोबाइल वाहन को लगाया गया है, ताकि पशुधन को आपातिक चिकित्सा सेवाएं और स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान की जा सकें। प्रत्येक मोबाइल वाहन में तीन सदस्यों का एक दल होगा, जिसमें एक पशु चिकित्सक, एक पैरा वैट और एक सहायक-सह-चालक शामिल हैं। इसके लिए पशुपालक से प्रति दौरा प्रति मालिक के हिसाब से 100 रुपये की मामूली फीस वसूल की जाएगी। बहरहाल, उपचार और औषधियां निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएंगी।

□□

दूध देने वाले पशुओं की कैसे करें देखभाल

-डॉ. राजेन्द्र सिंह

सर्दी के मौसम में दोपहर के समय/तेज धूप के समय पशुओं को गुनगुने पानी से नहलाएं तथा नहलाने के बाद हल्का-हल्का सरसों का तेल शरीर के ऊपर लगाएं। पशुओं के पेट के अंदर तथा बाहर के परजीवी जैसे जूण तथा चीचड़ आदि से बचाव के लिए देखभाल करनी चाहिए तथा पशु विशेषज्ञ से पूछ कर दवा देनी चाहिए।

हमारे देश में ग्रामीण क्षेत्र के माली हालात सुधारने में पशुधन की अहम भूमिका रही हैं, किंतु इस क्षेत्र का विकास बहुत कम और बढ़िया पशुओं का पलायन बहुत ज्यादा हुआ है। इसका उदाहरण यह है कि आज हमारे पास ज्यादातर पशुओं का दूध उत्पादन अन्य विकसित देशों के पशुओं के मुकाबले कम हैं। जैसे कि उदाहरण के तौर पर इजरायल जैसे छोटे से देश जिसका जन्म करीबन हमारी आज़ादी के साथ ही हुआ था उसकी प्रति पशु दूध उत्पादन क्षमता करीबन 12000 लीटर प्रतिवर्ष है।

इस समस्या को ध्यान में रखकर हरियाणा के पशुपालन विभाग द्वारा आवश्यक कदम उठाएं गये, जैसे कि मुर्रा भैंस संरक्षण के लिए प्रोत्साहन योजना, जिसके अंतर्गत पशुपालकों को पशुओं के दूध व नस्ल के आधार पर काफी राशि प्राप्त हुई जोकि आज भी चल रही है। इसके माध्यम से मुर्रा भैंसों का पलायन काफी हद तक रूका हुआ है तथा पशुपालकों को नस्ल व नस्ल सुधार कार्यक्रम की जानकारी प्राप्त करने में काफी फायदा हुआ। प्रदेश में ज्यादातर दूध की प्राप्ति भैंसों से है और इसे बढ़ाने की और भी गुंजाइश है तथा बढ़ाया जा सकता है अगर हम अपने दुधारू पशुओं की देखभाल विशेष तौर से उनके रहन-सहन व अन्य बातों की देखभाल तथा संतुलित आहार व हरे चारों का प्रबंध तथा रोगों से बचाव की व्यवस्था सही प्रकार से निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर करेंगें, तो दुधारू पशुओं से हम अधिक दूध प्राप्त कर सकते हैं।

पशुघर व्यवस्था/रहन-सहन

दुधारू पशुओं को ज्यादातर गर्मी, सर्दी, तूफान, आँधी से बचाने के लिए पशु घर के अंदर रखा जाता है। उनके रहने के लिए पूरा स्थान (4 वर्गमीटर प्रति पशु भैंस तथा 3.5 वर्ग मीटर प्रति गाय) घर के अंदर देना चाहिए तथा इसका दुगुना स्थान खुला घूमने फिरने के लिए प्रदान करना चाहिए। आवास हवादार व रोशनी का आदान-प्रदान करने वाला हो, ताकि पशुघर के अंदर गैसों (कार्बनडाइआक्साइड, मिथेन व अमोनिया इत्यादि) की अधिकता न हो व पशु को ज्यादा से ज्यादा घर के अंदर शुद्व वायु सांस लेने के लिए मिलें। सर्दी में बिछावन गीला न होने दें तथा खिड़कियों पर बोरी वगैरह लगा दें, ताकि ठंडी हवा सर्दी में सीधी पशु को न लगे। गर्मियों में पशुओं को लू से बचाएं और छायादार पेड़ों के नीचे बांधकर साफ व स्वच्छ पानी पिलाएँ। सर्दी के मौसम में विशेष तौर से

बातें काम की

पशुओं को हमेशा साफ-सुथरे माहौल में रखना चाहिए। बीमार होने पर पशुओं को सेहतमंद पशुओं से तुरंत अलग कर देना चाहिए और उन का इलाज कराना चाहिए। इसके अलावा पशुपालकों को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए :

- पशुओं को सेहतमंद रखने और बीमारी से बचाने के लिए उचित समय पर टीका लगवाना चाहिए।
- गाय भैंसों को गलघोंटू, एंथ्रैक्स लंगड़ी, संक्रामक गर्भपात, खुरपका मुंहपका, पोकनी आदि रोगों से बचाना चाहिए।
- पशुओं के लिए ऐसे रोगों से बचाव का एकमात्र उपाय टीकाकरण है।
- दुधारू पशुओं को नियमित रूप से पशुचिकित्सक को दिखाना चाहिए। बीमार पशुओं का इलाज जल्दी कराना चाहिए, ताकि पशु रोगमुक्त हो सके।
- बीमार पशु के बरतन व जंजीरें पानी में उबाल कर जीवाणुरहित करने चाहिए।
- फर्श और दीवारों को भी कास्टिक सोडा के घोल से साफ करना चाहिए।
- पशुओं को भीतरी व बाहरी परजीवियों के प्रकोप से भारी नुकसान होता है और उन का दूध उत्पादन घट जाता है। पशु कमजोर हो जाते हैं। भीतरी परजीवियों के प्रकोप से भैंस के बच्चों में 3 महीने की उम्र तक 33 फीसदी की मौत हो जाती है और जो बच्चे बचते हैं, उन का विकास बहुत धीमा होता है।
- परजीवी के प्रकोप से बड़े पशुओं में भी कब्ज, एनीमिया, पेटदर्द व डायरिया वगैरह के लक्षण दिखाई देते हैं, इसलिए हर तीन माह में भीतरी परजीवियों के लिए कृमिनाशक दवा का प्रयोग करना चाहिए।
- बाहरी परजीवियों जैसे किलनी, कुटकी व जूं से बचाने के लिए समय-समय पर पशुओं की सफाई की जानी चाहिए। पशुओं में इन का ज्यादा प्रकोप हो जाने पर निकट के पशुचिकित्सक से तुरंत संपर्क करना चाहिए।
- नए खरीदे गए पशुओं को लगभग एक महीने तक अलग रख कर उन का निरीक्षण करना चाहिए। इस अवधि में अगर पशु सेहतमंद दिखाई दें और उन्हें टीका न लगा हो, तो टीकाकरण अवश्य करा देना चाहिए।
- पशुओं को साफ-सुथरे माहौल में रखा जाए, उन्हें साफ पानी और पौष्टिक आहार दिया जाए और नियमित रूप से टीकाकरण कराया जाए, तो वे हमेशा सेहतमंद बने रहते हैं और उन से पर्याप्त मात्रा में दूध मिलता रहता है।

गुनगुना व ताजा पानी पशु को जितना हो सके अधिक से अधिक 3-4 बार करके अवश्य पिलाएं। इससे पशु के शरीर की सारी क्रियाएं सुचारू रूप से चलेंगी। गर्मियों में भैंसों को दिन में तीन-चार बार अवश्य नहलाएं।

सर्दी के मौसम में दोपहर के समय/तेज धूप के समय पशुओं को गुनगुने पानी से नहलाएं तथा नहलाने के बाद हल्का-हल्का सरसों का तेल शरीर के ऊपर लगाएं। पशुओं के पेट के अंदर तथा बाहर के परजीवी जैसे जूण तथा चीचड़ आदि से बचाव के लिए देखभाल करनी चाहिए तथा पशु विशेषज्ञ से पूछ कर दवा देनी चाहिए। अगर ऐसा नहीं किया तो ये परजीवी पशुओं का खून चूसेंगें, जिससे पशु में कमजोरी आएगी और बीमारियों फैलेंगी। मच्छर, मक्खी व ठंड से बचाने के लिए शाम को पशुओं को पशुघर के अंदर रखें तथा मच्छरदानी का प्रयोग करें।

पशुघर का फ़र्श पक्का तथा खुरदरा रखने से पशु फिसल

कर नहीं गिरता। सर्दी के मौसम में पशु का बिछावन कम से कम 6 इंच मोटा रखें इसके लिए धान की पुराल व खितवा इत्यादि का प्रयोग करें। पशु घर में पशु के खड़े होने के स्थान के पीछे हल्की नाली बनाएं, ताकि पशु द्वारा किया गया पेशाब बाहर निकल सकें व पशु द्वारा सर्दी के मौसम में किये गये गोबर व पेशाब के स्थान को तुरंत सूखा करते रहें।

अन्य देखभाल

पशु का दूध हमेशा पूर्ण हस्त विधि यानि के हाथ के बीच थन को लेकर प्यार से दबाकर दूध निकालना चाहिए, लेकिन हमारे ज्यादातर भाई अंगूठा दबाकर दूध निकालते हैं, जो कि गलत है क्योंकि इस से पशु के थन पर गांठ पड़ जाती है तथा थनैला रोग हो जाता है। दूध निकालने वाला आदमी रोगी नहीं होना चाहिए तथा दूध निकालते वक्त पशु के चारों तरफ शांत वातावरण होना चाहिए। बच्चे को दूध उसके शरीर के वजन के हिसाब तथा आयु के अनुसार पिलाना चाहिए। मोटे तौर पर बच्चे के शरीर के वजन का 1/10वां हिस्सा खीस आधे घंटे से एक घंटे के अंदर-अंदर पिला देना चाहिए।

पशु आहार व हरा चारा

हमारे देश व प्रदेश में प्रति पशु हरे चारों की बहुत कमी है। इसके लिए पशुपालकों को हो सके, तो सरकार द्वारा उपलब्ध उत्तम किस्म के बीजों की बिजाई करनी चाहिए तथा जमीन का हिसाब लगाकर कुछ प्रतिशत हिस्से में चारे की बिजाई जरूर करनी चाहिए तथा एक फसल चक्र बनाना चाहिए ताकि पशुओं को पूरे साल हरा चारा मिलता रहे। क्योंकि हरा चारा विटामिनों से भरपूर होता हैं व किफायती पड़ता है व दूध के उत्पादन को बढ़ाने में अहम् भूमिका निभाता है। अधिक मात्रा में उपलब्ध हरे चारों से साइलेज (जैसे ज्वार, बाजरा मक्का) व 'हे' बनाएं (जैसे बरसीम इत्यादि) ताकि हरे चारों की कमी वाले महीनों के समय में (मई, जून व अक्टूबर, नवम्बर) पशुओं को खिलाया जा सके, लेकिन इसके साथ ही सूखा चारा व भूसा जरूर दें वरना अकेले हरे चारे से पशु को अफारा हो जायेगा। अगर अफारे की समस्या आ जाती है, तो तुरंत पशु को 60 ग्राम तारपीन का तेल व 500 ग्राम से 750 ग्राम सरसों का तेल मिलाकर रोगी पशु को पिलाएं तथा उसके बाद पशु चिकित्सक की सलाह लें। भैसों व गायों को संतुलित आहार दें, जिसमें ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज लवण व विटामिन उचित अनुपात व मात्रा में हो। प्रतिदिन तकरीबन 100 ग्राम खनिज मिश्रण चारे में मिलायें व प्रोटीन के लिए खल व बिनौला दें तथा ऊर्जा के लिए अनाज दें। चारे में फास्फोरस की कमी के कारण अनेक रोग जैसे के लहू मूतना अथवा लाल मूतना रोग हो जाते है। अतः फास्फोरस की कमी को पूरा करने के लिए गेहूं के आटे का छानस पशु के खानपान में मिलाएं। एक दूध देने वाला पशु जो 10-12 लीटर दूध दे तो उसे 25-30 किलो हरा चारा तथा 6-7 किलो दाना मिश्रण प्रतिदिन दें।

ऐसे बनायें

इसके साथ-साथ ध्यान रखें सर्दी के मौसम में 35 प्रतिशत अतिरिक्त अनाज का हिस्सा व गर्मी के मौसम में खली व बिनौले का हिस्सा अतिरिक्त मिलाकर पशुओं को खिलाएं। पशु के अंदर खनिज तत्वों की कमी के कारण पशु जकड़न व नये दूध नहीं होता तथा मूत्र पीते हैं, दीवार चाटते हैं, कपड़ा व मिट्टी खाते हैं। इसलिए पशुओं को खनिज मिश्रण पूरे साल रोजाना देते रहें इससे पशु को बहुत ही फायदा होगा।

रोगों से बचाव के लिए इलाज से बेहतर है कि पद्धति का अनुसरण करें इसलिए पशुओं को मुंह-खुर, गलघोंटू व माता आदि से बचाव के लिए टीकाकरण अवश्य करवायें। दस्त लगने व थनैला होने पर हमारे लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की पशु रोग जांच प्रयोगशाला व पशुपालन विभाग की पशु रोग जांच प्रयोगशाला में गोबर व दूध की जांच करवा कर पशु चिकित्सक से इलाज करायें। अगर हम ऊपर लिखी इन बातों पर ध्यान देंगें, तो हम अपने पशुओं से अच्छा दूध उत्पादन ले सकते हैं। □□

वरिष्ठ विस्तार विशेषज्ञ, पशु विज्ञान, रोहतक, लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा व पशु विज्ञान वि. वि., हिसार

भेड़ पालन-लाभदायक व्यवसाय

प्राचीन काल से ही मानव का सम्बन्ध भेड़ो के साथ है। ऐसा माना जाता है कि कांस्य युग के समय मे एशिया में भेड़ को सबसे पहले पालतू पशु बनाया गया था। भेड़ पालन के लिए बहुत कम पूँजी और न ही बहुत ज्यादा देखरेख की ही आवश्यकता होती है, इसीलिए प्राचीन काल से ही भेड़ों का पालन करना मानव का एक प्रमुख व्यवसाय रहा है।

प्राचीन काल से ही मानव का सम्बन्ध भेड़ो के साथ है। ऐसा माना जाता है कि कांस्य युग के समय मे एशिया में भेड़ को सबसे पहले पालतू पशु बनाया गया था। भेड़ एक ऐसा पालतू जानवर है जो बहुत ही तेजी से विकास करता है तथा इनकी देखभाल करने में भी बहुत अधिक मेहनत करने की जरूरत नही होती है। यह एक ऐसा पशु है, जिसका पालन किसी भी प्रकार की जलवायु में किया जा सकता है, परन्तु भेड़ सामान्यतः कम वर्षा वाले शुष्क क्षेत्रों में पाई जाती है। भेड़ पालन के लिए बहुत कम पूँजी और न ही बहुत ज्यादा देखरेख की ही आवश्यकता होती है, इसीलिए प्राचीन काल से ही भेड़ों का पालन करना मानव का एक प्रमुख व्यवसाय रहा है।

भारत में भेड़पालन

भारत में भेड़ो की कुल संख्या 6.5 करोड़ है। भेड़े कम वर्षा वाले स्थानों तथा पठारी भागों में मुख्य रूप से पाली जाती है। राजस्थान में देश की कुल भेड़ो का 14 प्रतिशत पाला जाता है। भेड़ उत्पादन की दृष्टि से आंध्र प्रदेश का देश में पहला स्थान है। देश के पश्चिमी भागों में भेड़ पालन बहुतायत किया जाता है। इसके अतिरिक्त कर्नाटक, तमिलनाडु पंजाब हरियाणा में भी भेड़ पालन का कार्य किया जाता है।

भेड़ पालन की जानकारी व फायदे

भेड़ से सम्बंधित जानकारियां

भेड़ झुंड में रहना ज्यादा पसंद करती है। इनकी सुनने की तथा किसी भी चीज़ को याद रखने की क्षमता बहुत अधिक होती है। भेड़ एक शाकाहारी जानवर है, जो घास तथा पेड़ पौधों की हरी पत्तियों को अपने भोजन के रूप में प्रयोग करती है। सामान्यतः भेड़ों के सींग नहीं होते, परंतु इनकी कुछ प्रजातियों में सींग पायी जाती है। विश्व मे सबसे अधिक भेड़ों की संख्या चीन में

पाई जाती है। भेड़ पालन के मामले में भारत विश्व मे तीसरे स्थान पर है। सन् 1996 में स्कॉटलैंड में भेड़ का एक क्लोन बनाया गया था, जिसका नाम 'डाली' रखा गया था। भेड़ एक स्तनपायी जानवर है। भेड़ो की 12-18 महीनों की आयु प्रजनन के लिए सबसे उचित होती है। सामान्यतः भेड़ एक समय में एक या दो बच्चों को जन्म देती है।

भेड़ों का प्रजनन मौसम के अनुसार ही करना चाहिए, क्योंकि अधिक गर्मी और बरसात के मौसम में प्रजनन होने से इनकी मृत्यु दर बहुत अधिक बढ़ जाती है। इनके बच्चे को मेमना कहते है। नर भेड़ो को रैम तथा मादा भेड़ो को ईव कहा जाता है। भेड़ की औसतन आयु लगभग 7 से 8 वर्ष होती है। परन्तु कुछ अच्छी प्रजाति की भेड़ों का जीवन काल इससे भी अधिक होता है।

भेड़ पालन से लाभ

भेड़ हमारे लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण पशु है। भेड़ पालन ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की आय का एक प्रमुख साधन भी है। भेड़ का पालन करके तथा इनकी अच्छी तरह देखभाल तथा पोषण करके इनसे ऊन, मांस तथा दूध प्राप्त किया जा सकता है। भेड़ का गोबर बहुत अच्छे प्रकार का उर्वरक होता है, जिससे खेतों की उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। भेड़ के दूध में

प्रोटीन तथा वसा की अधिक मात्रा पायी जाती है। इसके कारण भेड़ का दूध बहुत ही पौष्टिक तथा लाभदायक होता है। भेड़ के शरीर पर बहुत नरम और लंबे रोयें पाये जाते है, जिनसे ऊन का निर्माण किया जाता है। इनके द्वारा प्राप्त किये गए ऊन से विभिन्न प्रकार के वस्त्रों को बनाया जाता है, जिनका उपयोग मानव द्वारा किया जाता है।

भेड़ के ऊन में 'लेनोलिन' नामक प्राकृतिक तैलीय पदार्थ पाया जाता है, जिसका उपयोग प्रसाधन सामग्री तथा मोमबत्ती के निर्माण में किया जाता है। अच्छी प्रजाति की भेड़ ऊन का अधिक उत्पादन करती है। जो भेड़ें ऊन का कम उत्पादन करती हैं, उनका उपयोग दूध के लिए तथा मांस के उत्पादन में किया जाता है।

भेड़ की प्रजातियां

विश्व मे पायी जाने वाली भेड़ की कुल संख्या का लगभग 4 प्रतिशत भेड़ भारत में पायी जाती है। भारत मे ज्यादातर भेड़ें अत्यधिक शुष्क, पथरीली या फिर पर्वतीय क्षेत्रों में पायी जाती है। भारत मे सबसे अधिक ऊन देने वाली भेड़ें उत्तरी मैदानों के शुष्क क्षेत्रों में तथा गुजरात के जोरिया में पायी जाती है। भेड़ की प्रमुख प्रजातियों में मैरिनो, सफोल्क, डोरसेट हॉर्न, हैम्पशायर शीप, तथा जैसलमेरी भेड़ आदि प्रसिद्ध प्रजातियां है। भेड़ों की प्रजातियों का चुनाव तथा इनका पालन अपनी आवश्यकताओं के अनुसार करना चाहिए। जैसे कि मालपुरा, जैसलमेरी, मंडिया, मारवाड़ी, बीकानेरी, मैरिनो, कोरिडायल रामबुतु जैसी भेड़ की प्रजातियों को मांस के उत्पादन के लिए उपयुक्त माना जाता है। इसके अलावा, दरी को बनाने में उपयोग किये जाने वाले ऊन के उत्पादन के लिए मुख्य रूप से मालापुरा, मारवाड़ी, छोटा नागपुरी, शहाबाबाद आदि प्रजातियों का पालन करना चाहिए।

रूस की प्रजाति मेरिनो तथा न्यूजीलैंड की कोरिडेल प्रजाति की भेड़ से सबसे अधिक गुणवत्ता का ऊन प्राप्त किया जाता है। भारत के वैज्ञानिकों ने भेड़ की तीन प्रजातियों को मिलाकर 'हरनाली' नाम की एक नई प्रजाति की भेड़ का विकास किया है। इस प्रजाति की भेड़ में रोगों की प्रतिरोधक क्षमता अधिक है तथा इससे सबसे उच्च गुणवत्ता के ऊन का उत्पादन किया जा सकता है। □□

भेड़ का आवास

भेड़ो के आवास के लिए स्वच्छ और हवादार स्थल होना चाहिए। एक भेड़ को एक वर्ग मीटर ढका हुआ स्थान होना चाहिए। जहाँ तक संभव हो भेड़ों का बाड़ा पक्का होना चाहिए। आवास कच्चा स्थान भी हो सकता है। कच्चे आवास को समय समय पर लीप पोत कर साफ रखना चाहिए। अधिक गर्मी के दिनों में भेड़ों को भूमिगत बाड़ों में भी रखा जा सकता है।

भेड़ की ऊन कताई

भेड़पालक सामान्यतया वर्ष में दो बार ऊन की कताई करते है, लेकिन कहीं-कहीं पर यह कार्य साल में तीन बार भी किया जाता है। प्रथम बार की ऊन कतराई मार्च अप्रैल महीने में तथा दूसरी बार की ऊन कतराई का समय उपयुक्त मौसम के अनुसार ही चुना जाता है। ऊन कतरने से पूर्व भेड़ को नहलाया जाता है। नहलाने से भेड़ की ऊन में जमी धूल गंदगी आदि धुलकर पूरी तरह साफ हो जाती है। भेड़ों को बहते हुए पानी तालाब या पानी के कुंड में नहलाना चाहिए। जिस भेड़ को नहलाना हो, उस दिन धूप अच्छी होनी चाहिए, ऊन कतरने का कार्य ऊन के अच्छी तरह सूखने के बाद करना चाहिए। ऊन कतरने का स्थान पक्का और स्वच्छ होना चाहिए, जहाँ पर तिरपाल बिछाकर ऊन काटनी है। भेड़ की ऊन काटने का स्थान 10 गुना 5 फीट के आकार से कम नही होना चाहिए। सामान्यतया ऊन कतरने का कार्य हाथ द्वारा कैंची से ही किया जाता है। एक कुशल व्यक्ति एक दिन में हाथ की कैंची द्वारा 20 भेड़ों की ऊन कतर सकता है। विद्युत चालित ऊन कतरने की मशीन द्वारा अनुभवी तथा कुशल व्यक्ति 150 भेड़ों की ऊन एक व्यक्ति कतर सकता है।

AYURVET™

विषाक्त आहार हो या लंबी बीमारी, पशु के लीवर पर है बोझ भारी।
लीवर की सूजन या हो कृमियों से आहत, यकृफिट दे पशु को हर हाल में राहत।।

यकृफिट

लीवर टॉनिक

यकृफिट के उपयोग

- यकृत को क्षति से बचाने हेतु
- कमजोरी या बीमारी से उभरते हुए पशु के दुर्बल यकृत को स्वस्थ करने हेतु
- यकृत में सूजन, पीलिया, विषाक्तता, लीवर फ्लूक या अन्य पेट के कीड़ों के इलाज में सह-उपचार हेतु
- मेमने, बछड़े या बछियों के शारीरिक विकास हेतु
- कार्यक्षमता तथा दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने हेतु

पैक

4 बोलस की एक स्ट्रिप | 500 मि.ली. | 1 लीटर

•250 मि.ली. पैक में भी उपलब्ध

राष्ट्रीय किसान दिवस (23 दिसंबर)

किसानों के मसीहा माने जाने वाले देश के छठवें प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसंबर 1902 में हुआ था। चरण सिंह जी की जयंती के अवसर पर देश में किसान दिवस मनाया जाता है। इस दिन लोगों व किसानों को किसानी के प्रति जागरूक किया जाता है। किसानों के योगदान को समझाने हेतु यह पर्व मनाया जाता है। चौधरी चरण सिंह ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में भी काम किया है। चरण सिंह जी का मानना था कि खेती के केन्द्र में किसान है और किसान के साथ बड़ी कृतज्ञता से पेश आना चाहिए। किसान के श्रम का प्रतिफल अवश्य मिलना चाहिए। ये देश पहले से ही कृषि प्रधान देश रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किसानों को देश का सिरताज माना है।

चौधरी चरण सिंह जी ने प्रधानमंत्री कार्यकाल में रहते हुए किसानों के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएं लागू की। उनका मानना था कि जब तक देश का किसान सुरक्षित और संपन्न नहीं होगा देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता है। वे

नैतिकतावादी प्रधानमंत्री थे। चौधरी चरण सिंह जी के नेतृत्व में ही किसानों को उनका हक देने वाले विधेयक अर्थात जमींदारी उन्मूलन विधयेक वर्ष 1952 में पारित किया गया था। देश में लेखपाल पद का सृजन भी चरण सिंह जी ने ही किया था। इससे पहले पूरा कार्य पटवारी करते थे, परन्तु उन्होंने किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए लेखपाल की नियुक्ति की थी। वे प्रधानमंत्री से पहले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, केन्द्रीय गृह मंत्री पद पर रहे। वे किसानों के सच्चे शुभचिंतक माने जाते थे।

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस (14 दिसंबर)

भारत में हर साल 14 दिसम्बर को राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस मनाया जाता है। भारत में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम वर्ष 2001 में ऊर्जा दक्षता ब्यूरो द्वारा लागू किया गया था। ऊर्जा दक्षता ब्यूरो एक संवैधानिक निकाय है, जो भारत सरकार के अधीन आता है और ऊर्जा के उपयोग को कम करने के लिए नीतियों और रणनीतियों के विकास में मदद करता है। भारत में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम का उद्देश्य पेशेवर, योग्य और ऊर्जावान प्रबंधकों एवं लेखा परीक्षकों की नियुक्ति करना है,

जिनके पास ऊर्जा से संबंधित परियोजनाओं के नीति निर्धारण, वित्त प्रबंधन एवं क्रियान्वयन की विशेषज्ञता हो।

ऊर्जा संरक्षण का सही अर्थ ऊर्जा के अनावश्यक उपयोग से बचते हुए कम-से-कम ऊर्जा का उपयोग करना है, ताकि भविष्य में उपयोग हेतु ऊर्जा के स्रोतों को बचाया जा सके। ऊर्जा संरक्षण की योजना को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए हर इंसान को अपने व्यवहार में ऊर्जा संरक्षण को शामिल करना चाहिए। पूरे भारत में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण के अभियान को और प्रभावशाली और विशेष बनाने के लिये सरकार द्वारा और अन्य संगठनों द्वारा लोगों के बीच में बहुत सी ऊर्जा संरक्षण प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया जाता है। छात्र या संगठन सदस्य ऊर्जा संरक्षण दिवस पर स्कूल, राज्य, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर चित्रकला प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है। जीतने वाले छात्रों को 14 दिसंबर को राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस को विद्युत मंत्रालय सम्मानित करता है। हमारे वैज्ञानिक ऊर्जा के नए एवं वैकल्पिक संसाधनों की खोज व इसके विकास में लगे हुए हैं, पर हम नागरिकों का कर्तव्य है कि वे ऊर्जा के महत्व को समझें और ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूक बनें।

बकरीपालन को दें व्यावसायिक रंग

भारत के गांवों में गरीब तबके के लाखों लोग पिछले कई दशकों से जैसे तैसे बकरीपालन कर के अपने परिवारों का पेट पालते रहे हैं। कई सालों तक बकरीपालन करने के बाद भी गरीबों की माली हालत में रत्ती भर भी सुधार नहीं हो पाता है।

आज बकरीपालन एक बड़ा कारोबार बन चुका है। अगर बकरीपालन करने वाले व्यावसायिक तरीके से गोट फार्मिंग (बकरीपालन) करें, तो बकरियों की संख्या और आमदनी दोनों में लगातार इजाफा हो सकता है। इतना ही नहीं बड़े पैमाने पर बकरीपालन शुरू करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों की बकरीपालन योजनाओं और अनुदान का लाभ भी लिया जा सकता है।

इस कारोबार को शुरू करने से पहले यह जानना और समझना जरूरी है कि व्यावसायिक बकरीपालन क्या है? इस में कितनी लागत आएगी? कितना मुनाफा होगा? सरकार की ओर से क्या मदद मिलती है? बकरीपालन में 100 से 1000 बकरियों को 1 ही बाड़े में रखा जा सकता है और बड़े नाद में सभी को एक साथ खाना खिलाया जाता है? यह तरीका मुर्गी पालन यानी पोल्ट्री फार्म की तरह ही होता है। घर में 5-7 बकरियां पालने और बकरियों का व्यावसायिक रूप से पालन करने में फर्क है। अगर 1 परिवार कम से कम 100 बकरियों का पालन करे, तो उस परिवार के 6-8 लोगों को काम मिलेगा और आमदनी भी बढ़ेगी।

बकरीपालन को दें व्यावसायिक रंग

गौरतलब है कि भारत में मांस की मांग करीब 80 लाख टन है, जबकि 60 लाख टन का ही उत्पादन हो पाता है। इस में बकरी के मांस की खपत 12 फीसदी ही है। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि बकरीपालन का बाजार कितना खाली है।

पशु वैज्ञानिक डा. सुरेंद्र नाथ बताते हैं कि गोट फार्मिंग की छोटी यूनिट में 20 बकरियां और 1 बकरा होते हैं, जबकि बड़ी यूनिट में 40 बकरियां और 2 बकरे होते हैं, लोकल किस्म की बकरी 1 साल में 2 बार 2-2 बच्चे देती है। कुछ बकरियां 3-4 बच्चे भी देती हैं। इस हिसाब से 20 बकरियों वाली यूनिट से 1 साल में कम से कम 80 बच्चे मिल सकते हैं। 1 बकरे या बकरी की कीमत कम से कम 4000 रुपए होती है। इस लिहाज से 80 बकरे बकरियों की कीमत 320000 रुपए होगी। 1 यूनिट की बकरियों के चारे, दवा व टीकों आदि पर साल में करीब 1 लाख रुपए खर्च होते हैं। इस तरह 1 यूनिट से कम से कम ढाई लाख रुपए के करीब सालाना कमाई होती है।

पिछले 12 सालों से बकरीपालन कर के अच्छी खासी कमाई करने वाले पटना जिले के नौबतपुर गांव के मनोज बताते है कि इस व्यवसाय की सब से बड़ी खासियत यह है कि बाढ़ या सूखा जैसी आपदा का इस पर खास असर नहीं पड़ता। इस के अलावा अचानक पैसों की जरूरत पड़ने पर बकरियों को बेचा जा सकता है। बकरों व बकरियों को कभी भी कहीं भी बेचा जा सकता है। कई मौकों पर तो बकरियों की मुंहमांगी कीमतें मिलती हैं।

प्रोफेशनल तरीके से बकरी पालन शुरू करने से पहले विशेषज्ञों से सलाह लेना जरूरी है। किसी की सुनी-सुनाई बातों में फंस कर इस काम को शुरू नहीं करें। बकरियों की 1 छोटी यूनिट के लिए 300 वर्गमीटर जगह और करीब 1 लाख रुपए की जरूरत होती है। बकरियों को रखने के लिए जमीन से कुछ ऊंचाई पर बांस की जमीन बना ली जाती है। बकरीपालन वाली जगह पर पानी का जमाव नहीं होना चाहिए और जगह हवादार होनी चाहिए। इस कारोबार को समझने के बाद बजट और योजना बना कर ही काम शुरू करना बेहतर होगा। □□

ब्यांत के बाद दूध उत्पादन में कमी
कारण अनेक, समाधान एक

AYURVET™

पशुचिकित्सकों द्वारा
अपनाया गया वैज्ञानिक
रूप से जांचा परखा
भरोसेमंद हर्बल उपाय

रैस्टोबल

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए

500 मि.ली. 1 लीटर

पशुओं की बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए शक्तिशाली समाधान

दवा कंपनी की नौकरी छोड़ शुरू किया पशुपालन 2500 लीटर दूध प्रतिदिन का आज कर रहे कारोबार

वर्ष 2000 में मुझे कहीं से खबर मिली कि वाराणसी के रामनगर क्षेत्र में पराग संस्था एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कर रही है। वहां पर मैंने कृत्रिम गर्भाधान एवं पशु प्राथमिक चिकित्सा की ट्रेनिंग प्राप्त की। मुझे वहां जाने से पहले पशु में बीमारी के संबंध में बहुत परेशानी उठानी पड़ती थी। गांवों में पशुचिकित्सक बहुत मुश्किल से मिलते थे। आज भी पशुपालकों को इस समस्या का सामना करना पड़ता है।

वाराणसी के कपसेठी क्षेत्र में डॉक्टर साहब के नाम से मशहूर श्री योगेन्द्र प्रसाद सिंह ने पशुपालन के क्षेत्र को एक नया मुकाम दिया है। वह अपने पशुपालक भाइयों को संदेश देते हैं कि पशुपालन नुकसानदेह नहीं है, अगर आप लग कर, बढ़िया ढंग से पशुपालन करने के लिए तैयार हैं, तो यह किसी सरकारी नौकरी से कम नहीं। इसके लिए आपको कहीं घर से दूर भी जाना नहीं पड़ता और घर बैठे स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। श्री योगेन्द्र प्रसाद सिंह जी से बातचीत के कुछ अंश-

आपने पशुपालन की शुरूआत कैसे की?

वर्ष 1995 में मैंने कानपुर यूनिवर्सिटी से एमएससी की पढ़ाई प्रथम वर्ष में ही छोड़ कर गुजरात में बैटरी का स्क्रैप बिजनेस करने चला गया। फिर वहां एक दवा कंपनी में भी मैंने 6 महीने काम किया। पर मेरे पिताजी की यह इच्छा थी कि मैं घर पर ही कुछ काम करूं। फिर वर्ष 1999 में पिता जी ने ही मुझे लोन ले कर चार गाय खरीद कर पशुपालन कर ने के लिए प्रेरित किया।

आपको पशु स्वास्थ्य एवं कृत्रिम गर्भाधान का प्रशिक्षण कहां और कैसे मिला?

वर्ष 2000 में मुझे कहीं से खबर मिली कि वाराणसी के रामनगर क्षेत्र में पराग संस्था एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कर रही है। वहां पर मैंने कृत्रिम गर्भाधान एवं पशु प्राथमिक चिकित्सा की ट्रेनिंग प्राप्त की। मुझे वहां जाने से पहले पशु में बीमारी के संबंध में बहुत परेशानी उठानी पड़ती थी। गांवों में पशुचिकित्सक बहुत मुश्किल से मिलते थे। आज भी पशुपालकों को इस समस्या का सामना करना पड़ता है।

आपको पशुपालन के शुरूआत में किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?

जब मैं नौकरी छोड़ कर आया था और कुछ गायों से पशुपालन शुरू किया था, तब मुझे बहुत मुश्किलें आईं थी। कुल 5-6 लीटर दूध लेकर मैं सड़क पर 2-3 घंटे इंतजार करता था तब जाकर दूध बिकता था। पर पशु स्वास्थ्य प्रशिक्षण के बाद मेरे आय का साधन बढ़ गया। इसमें मेरी फार्मा कंपनी में काम के अनुभव से भी मदद मिली। मुझे लोग अपने पशु के बीमारी दूर करने व कृत्रिम गर्भाधान के लिए बुलाने लगे। धीरे धीरे काम

भी बढ़ने लगा।

5 लीटर दूध से आज 2500 लीटर दूध का सफर कैसे तय हुआ?

वर्ष 2005 में महिला पशुपालकों को प्रोत्साहित करने के लिए पराग संस्था की मदद से हमने एक महिला दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति गठित की। इसकी अध्यक्ष मेरी धर्मपत्नी ही है। शुरूआत में इसमें 40 पशुपालकों व महिलाओं ने दूध एकत्रित करना शुरू किया। मुख्यतः यह दूध पराग संस्था को हम देते हैं। बचे हुए दूध का पनीर, पेड़ा, दही, घी इत्यादि बनाकर सीधे हम खुद बेचते हैं।

दूध के व्यापार से दूध के बने उत्पादों को बेचने की जरूरत क्यों पड़ी?

जब आप दूध का व्यापार करते हैं, तो कभी आपका दूध बिक जाता है कभी बहुत सा दूध नहीं भी बिकता है। चूंकि दूध एक समय के साथ खराब होने वाला उत्पाद है, तो हमें दूध की इस्तेमाल की अवधि बढ़ाने के लिए हमने पेड़ा बनाने की शुरूआत की। यह इतनी प्रसिद्ध हुई कि हम इस की मांग कभी पूरी नहीं कर पाते। इसी तरह दही, घी, पनीर आदि की भी बहुत मांग है। इससे मुनाफा भी ज्यादा होता है।

क्या आप युवाओं को प्रशिक्षित भी करते हैं?

आज मुझे आसपास के 50 गांवों के लोग जानते हैं। ज्यादातर पशुओं के स्वास्थ्य के संबंध में मुझे बुलाया जाता है। मैं अकेले सारा काम नहीं कर सकता। मैं लगातार युवाओं को साथ जुड़ने के लिए प्रेरित करता हूं। आज भी मेरे साथ चार और युवा मित्र हैं, जिन्हें मैंने प्रशिक्षित किया है। आज वे भी मेरी तरह गांवों में कृत्रिम गर्भाधान एवं पशु स्वास्थ्य संबंधी समाधान करते हैं। इससे उनके लिए रोजगार का अवसर भी तैयार हुआ है।

भविष्य में आयुर्वेट लिमिटेड संस्था के सहयोग से यहां कपसेठी में ही एक प्रशिक्षण केंद्र भी खोला जाने वाला हे। इसमें युवाओं को पशुस्वास्थ्य समाधान एवं गोबर के उचित प्रबंधन के लिए वर्मी कम्पोस्ट एवं बायोगैस के प्रयोग संबंधित तकनीकी जानकारी दी जाएगी।

क्या पशुपालन के साथ अतिरिक्त आय भी की जा सकती है?

जी बिल्कुल! पशुपालन का काम केवल कुछ देर का है। आप साथ में कई अन्य कार्य कर सकते हैं। अधिकतर लोग कृषि व पशुपालन एक साथ करते हैं। इससे कृषि अवशेष पशु के भोजन में काम आ जाती है। और पशु का गोबर को आप जैविक खाद बनाकर कम लागत में अच्छी कृषि भी कर सकते हैं। आजकल कृषि के अलावा भी युवा पशुपालन के साथ-साथ कई तकनीकी कार्य अपने गांव में ही शुरू कर रहे हैं। इससे आप एक से ज्यादा स्रोतों से आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। हमें समय का भरपूर इस्तेमाल करना चाहिए।

आपको पशुपालन का भविष्य कैसा दिखता है?

देखिए जब तक व्यक्ति इस संसार में जिंदा है वह दूध पीना नहीं छोड़ेगा, वह दही, घी व मिठाई खाना नहीं छोड़ेगा। जब मैंने पशुपालन की शुरूआत की थी, तो मैं अकेला था। आज मेरे साथ 200 पशुपालक भाई दूध का व्यापार करते हैं। दूध की मांग लगातार बढ़ती जा रही है। आज जो भी उत्पादन है वह मांग से काफी कम है, अतः इस क्षेत्र में बहुत काम करने की आवश्यकता है। हम भविष्य में चाहते हैं कि लोग ज्यादा से ज्यादा पशुपालन के साथ जुड़े और घर बैठे स्वरोजगार का लाभ कमाएं। यह बहुत फायदे का सौदा है और आपको प्रतिदिन आय प्राप्त होती है।

□□

प्रवीण कुमार शुक्ला, असिस्टेंट मैनेजर, सीएसआर, आयुर्वेट लिमिटेड
ईमेल: pkshukla@ayurvet.com

26 नवंबर, 2018: राष्ट्रीय दुग्ध दिवस

आयुर्वेट पशुजगत रेडियो कार्यक्रम में प्रसारित वार्ता पर आधारित

26 नवंबर 2018 को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर आकाशवाणी के इंद्रप्रस्थ चैनल पर पशुजगत रेडियो कार्यक्रम के अंतर्गत डॉ. अनूप कालरा की एक विशेष वार्ता का प्रसारण किया गया। प्रस्तुत हैं इसके मुख्य अंश।

किसान भाइयों, आज का यह दिन 26 नवंबर 2018 बहुत ही महत्वपूर्ण दिवस है। मैं इस राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। आज हम दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर हैं। देश में करीब 176.35 मिलियन टन उत्पादन होता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारे किसान भाई और विशेषकर महिलाओं की भूमिका सराहनीय है, इसलिए मैं पुनः आपका अभिनंदन करता हूं।

किसान भाइयों! यह दिवस धूमधाम से पूरे देश में मनाया जाता है। दिल्ली में भी राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह किसानों को संबोधित करेंगे। मेरा मत है कि इसे हमें राष्ट्रीय दुग्ध दिवस न कहकर राष्ट्रीय दुग्ध पर्व कहना चाहिए।

भारतीय किसानों को दूध उत्पादन में संपन्न बनाने का जिम्मा उठाया डॉ. वगीज़ कुरियन ने। उन्होंने भारत के दूध उत्पादन को एक नयी दिशा देने का काम किया। यही से भारत में श्वेत क्रांति की शुरुआत हुई और डॉ. कुरियन को श्वेत क्रांति का जनक कहा जाने लगा। डॉ. कुरियन की सराहनीय सेवाओं के लिए उनके जन्मदिवस 26 नवम्बर को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। सबसे पहले इंडियन डेरी एसोसिएशन ने 2014 में डॉ. कुरियन के जन्मदिवस को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के रूप में मनाया उसके बाद से ही यह दिन राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के रूप में मनाया जाता है।

देश को दुग्ध क्षेत्र में प्रथम स्थान पर आने में आपका योगदान अमूल्य है। आप क्वालिटी मिल्क का उत्पादन कर रहे हैं और आपने इसे एक मुकाम पर पहुंचाया है। आप जो गाय या भैंस से गुणवत्तायुक्त दूध का उत्पादन करते हैं वह हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभदायक है। ऐसा कहा जाता है कि मां के दूध के बाद जो सबसे अच्छा दूध माना जाता है वह गाय का दूध है। चूंकि यह न केवल पौष्टिक है, बल्कि हजम भी आसानी से हो जाता है।

विश्वस्तर की बात करें तो ऐसा ही विश्व दुग्ध दिवस 1 जून को मनाया जाता है। ऐसे दिवसों को मनाने का एक ही लक्ष्य कि दूध उत्पादन से जुड़े लोगों में नई चेतना, उत्साह एवं उमंग पैदा करना। किसान भाइयों एवं बहनों! आप दुग्ध उत्पादन के जिस कार्य में लगे हैं वह देश एवं समाज हित का कार्य है। आपका संस्थान आयुर्वेट लिमिटेड पिछले 25 वर्षों से आपके साथ मिलकर काम कर रहा है।

आयुर्वेट पशुजगत कार्यक्रम का संचालन करते हुए लगभग 15 साल हो चुके हैं। इस कार्यक्रम के द्वारा हमारा प्रयास रहता है कि हम आपको अच्छे से अच्छे वैज्ञानिकों/पशुचिकित्सकों/सफल किसानों से मिलवाएं ताकि आप उनके अनुभवों से बेहतर लाभ ले सके। इसके अलावा, हम अनेक कैपेन्स चलाते हैं कि किस प्रकार से हम अपने किसान की मदद करें, ताकि वह अपने पशुओं को स्वस्थ रख सकें। इसके लिए समय पर हम किसान भाइयों को ऑडियो/वीडियो मैसेज भेजते हैं एवं नई जानकारियों भेजते हैं। इसका उद्देश्य केवल एक है आपका पशु स्वस्थ रहे, अच्छा और क्वालिटी का दुग्ध उत्पादन करें। उसको आप जब स्वयं पीएं, अपने बच्चों को पिलाएं तो आपका स्वास्थ्य अच्छा हो और अगर आप बाजार में बेचे तो उसकी अच्छी कीमत आपको मिले, जिससे आपको अधिक लाभ प्राप्त कर सकें। आप, हम और पशुचिकित्सा विभाग मिलकर कोशिश करेंगे कि आने वाले समय में पशु का स्वास्थ्य का हित सर्वोपरि हो हम सब खुशहाल हों। मैं पुनः राष्ट्रीय दुग्ध पर आपको बहुत बहुत बधाई देता हूं एवं अभिनंदन करता हूं। □□

-आयुर्वेट डेस्क

मुर्गीपालन लाभकारी क्यों और कैसे?

-डॉ. अनूप कालरा

बिजनेस कोई भी हो उसकी सफलता आपकी मेहनत पर ही निर्भर करती है, अगर आपको मुर्गीपालन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, तो सबसे पहले इसके बारे में जानकारी जुटाएं। इसके लिए अपने पास के पोल्ट्री फार्म के मालिकों से मिलकर बिजनेस कैसे करना है और किस तरह से अपना सामान मार्किट तक भेजना है। यह जानकारी ले। जितनी अधिक जानकारी आपके पास होगी, उतना ही बेहतर आपके बिजनेस के लिए होगा।

मुर्गीपालन लगातार 8-10 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि की दर से बढ़ रहा है, जबकि दूध व्यवसाय की वार्षिक वृद्धि दर 4-5 प्रतिशत अनुमानित है। कुछ प्रबुद्ध शाकाहारियों द्वारा अनिषेचित अंडे को शाकाहार के रूप में स्वीकार किए जाने से अंडे की मांग में राष्ट्रीय स्तर पर वृद्धि हुई है।

इस व्यवसाय में कम कीमत पर अधिक खाद्य पदार्थ प्राप्त होता है। उदाहरण के रूप में ब्रॉयलर मुर्गे का 1 किग्रा शरीर भार 2 किग्रा दाना मिश्रण खिलाकर प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार मुर्गी से 1 दर्जन अंडे पाने के लिए उसे सिर्फ 2.2 किग्रा दाना मिश्रण ही खिलाना जरूरी होता है। मुर्गी की खाद्य परिवर्तन क्षमता गाय और सूअर की तुलना में भी बहुत बेहतर होती है।

गाय 1 किग्रा खाद्य पदार्थ उत्पादन के लिए 5 किग्रा दाना मिश्रण तथा सूअर 1 किग्रा मांस उत्पादन के लिए 3 किग्रा दाना मिश्रण का उपयोग करता है, जबकि मुर्गी सिर्फ 2 किग्रा दाना खाकर 1 किग्रा शरीर भार पा लेती है। मुर्गी के मांस तथा अंडे के लिए अपने प्रदेश तथा पूरे देश में भली-भांति विकसित बाजार मौजूद है।

मुर्गी की बीट तथा बिछावन से बनाई गई खाद में गाय के गोबर की खाद की तुलना में अधिक मात्रा में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटाश पाया जाने के कारण इसकी कार्बनिक खेती के लिए बहुत मांग रहती है।

मुर्गी की सुखाई हुई बीट को निर्जमीकृत करने के बाद पशु आहार बनाने में भी प्रयोग किया जाता है।

मुर्गी का व्यवसाय एक ऐसा अनूठा धंधा है, जिसमें बहुत ही जल्दी आपकी पूंजी बढ़ोतरी के साथ आपको वापस मिल जाती है। ब्रॉयलर मुर्गा 5 सप्ताह में 2 कि.ग्रा. वजन पा सकता है।

इसी प्रकार मुर्गी से अंडा उत्पादन प्राप्त करने के लिए लगभग 4.5 महीने का समय पर्याप्त होता है। इस प्रकार पूंजी को लाभ सहित वापस पाने के बाद उसे फिर से इस व्यवसाय में लगाने से अगली बार और अधिक पूंजीगत लाभ की प्राप्ति संभव हो पाती है।

जगह का इंतज़ाम करना (शेड बनाना)

आप किस स्तर पर और कितनी मुर्गी को रखना चाहते है आपको उसी हिसाब से जमीन का इंतज़ाम करना होगा। वेसे तो एक मुर्गी के लिए 1 से 2.5 वर्गफुट जमीन पर्याप्त होती है, अगर इससे कम हो तो मुर्गियों को परेशानी आ सकती है, तो अगर आप 150 मुर्गियों को पालते है, तो आपको 150 से 200 फीट जमीन की जरूरत होगी। जगह साफ-सुथरी, खुली और सुरक्षित होनी चाहिए। खुली जगह में खुली हवा से मुर्गियां आगे चलकर बहुत सी बीमारियों से भी सुरक्षित रहेंगी। बाकी आप अपनी इच्छानुसार शहर में या शहर के बाहर अपने पोल्ट्री फार्म बना सकते है। कई शहरो में आपको पोल्ट्री फार्मिग शुरू करने के लिए पहले अनुमति लेनी होती है, जो आप अपने शहर के नगर निगम ऑफिस में जाकर पता कर सकते है। आपको आसपास रह रहे लोगों से एनओसी यानी नो ऑप्जेक्शन सर्टिफिकेट की भी आवश्यकता होती है।

मुर्गीपालन में तुलनात्मक रूप से कम पूंजी, कम स्थान तथा कम श्रमशक्ति की जरूरत पड़ती है। मुर्गी के व्यवसाय से सारे साल नियमित रूप से आय प्राप्ति संभव है। मुर्गीपालन के धंधे का विस्तार भी बहुत आसान है, क्योंकि एक अच्छी नस्ल की उन्नत मुर्गी सालभर में 250 से अधिक निषेचित अंड़े देने की क्षमता रखती है।

यदि वैज्ञानिक तरीके अपनाते हुए तथा नियमित रूप से टीकाकरण करने के साथ मुर्गीपालन किया जाए, तो इस व्यवसाय में जोखिम भी बहुत कम रहता है। मुर्गीपालन को स्वरोजगार के रूप में बेरोजगार नौजवान, गृहिणी तथा सेवानिवृत्त कर्मचारी भी सहजता से अपनाकर एक अतिरिक्त आय का स्रोत बना सकते हैं।

लाभकारी मुर्गीपालन हेतु ध्यान देने योग्य बातें

- ब्रॉयलर के चूजे की खरीदारी में ध्यान दें कि जो चूजे आप खरीद रहे हैं उनका वजन 6 सप्ताह में 3.4 किग्रा दाने खाने के बाद कम से कम 2 किग्रा हो जाए तथा मृत्यु दर 3 प्रतिशत से अधिक न हो।
- यदि अंडे वाली मुर्गी अर्थात लेयर के चूजे हों तो उन्हें हैचरी से ही रानीखेत एफ का टीका तथा पहले दिन ही मेरेक्स का टीका लगा होना चाहिए। व्हाइट लेग हॉर्न के मादा चूजे 8 सप्ताह में लगभग 1/2 किग्रा भार के हो जाने चाहिए।
- चूजे की खरीद के लिए सदैव अच्छी तथा प्रमाणित हैचरी का चूजा खरीदना ही अच्छा होता है। चूजे के आते ही उसे बक्से समेत कमरे के अंदर ले जाएं, जहां ब्रूडर रखा हो। फिर बक्से का ढक्कन खोल दें। अब 1-1 करके सारे चूजों को एलेक्ट्रल एनर्जी (Electral Energy) मिला पानी पिलाकर ब्रूडर के नीचे छोड़ते जाएं। बक्से में अगर बीमार चूजा है, तो उसे हटा दें।
- चूजों के जीवन के लिए पहला तथा दूसरा सप्ताह संकट का होता है। इसलिए इन दिनों में अधिक देखभाल की जरूरत होती है। अच्छी देखभाल से और पहले 7 दिनों तक एनबॉयोटिक और स्ट्रेस रोक देने से मृत्यु दर कम की जा सकती है और बेहतर वजन व स्वास्थ्य मिल सकता है।

- पहले सप्ताह में ब्रूडर में तापमान 90 डि.फे. होना चाहिए। प्रत्येक सप्ताह 5 डि. फे. कम करते हुए इसे 70 डि.फे. से नीचे ले जाना चाहिए। यदि चूजे ब्रूडर के नीचे बल्ब के नजदीक एक साथ जमा हो जाएं, तो समझना चाहिए कि ब्रूडर में तापमान कम है। तापमान बढ़ाने के लिए अतिरिक्त बल्ब का इंतजाम करें या जो बल्ब ब्रूडर में लगा है, उसको थोड़ा नीचे करके देखें।

- यदि चूजे बल्ब से काफी दूर किनारे में जाकर जमा हो तो समझना चाहिए ब्रूडर में तापमान ज्यादा है, ऐसी स्थिति में

मुर्गियों के प्रकार

मुर्गीपालन के बिजनेस में आपको सबसे पहले निर्णय लेना होता है कि आप किस तरह की मुर्गी पालना चाहते है। मुर्गी कुल तीन प्रकार की होती है। इसमें लेयर मुर्गी, ब्रॉयलर मुर्गी और देसी मुर्गी शामिल है।

लेयर मुर्गी का इस्तेमाल ज्यादातर अंड़े पाने के लिए किया जाता है। यह 4- 5 महीने की होने के बाद अंड़े देना प्रारम्भ कर देती है। इसके बाद यह लगभग 1 साल तक अंड़े देती है। उसके बाद जब इनकी उम्र 16 माह के आसपास होती है, तब इनको मांस के लिए बेच दिया जाता है।

ब्रायलर मुर्गी का इस्तेमाल ज्यादातर मांस के रूप में किया जाता है। यह दूसरे प्रकार की मुर्गी की तुलना में तेज़ी से बढ़ते है। यही वजह है जो इनको मांस के रूप में इस्तेमाल के लिए सबसे बेहतर बनाता है।

देसी मुर्गी का इस्तेमाल अंडे व मांस दोनों पाने के लिए किया जाता है। आप किस तरह की मुर्गी का पालन करना चाहते है, वह निर्णय लें। उसी हिसाब से आपको चूज़ों को खरीदना होगा।

तापमान कम करें। इसके लिए बल्ब को ऊपर खींचे या बल्ब की संख्या को कम करें। उपयुक्त गर्मी मिलने पर चूजे ब्रूडर के चारों तरफ फैल जाएंगे। वास्तव में चूजों के चाल-चलन पर नजर रख और समझकर ही तापमान को नियंत्रित करें।

- पहले दिन जो पानी पीने के लिए चूजे को दें, उसमें गुड़ का पानी या स्ट्रेस रोक मिलाएं।
- वैसे बी-कॉम्प्लेक्स या कैल्शियमयुक्त दवा 10 मिली प्रति 100 मुर्गियों के हिसाब से हमेशा दे सकते हैं। अगर ये दवाएं नियमित रूप से देते हैं, तो प्रति मुर्गी कम से कम 200 ग्राम अतिरिक्त वजन, बेहतर एफसीआर, नगण्य मृत्यु दर और बेहतर स्वस्थ मुर्गियों का होगा और अंततोगत्वा मुर्गीपालन में आपको 25 प्रतिशत अतिरिक्त मुनाफा होगा।
- जब चूजे पानी पी लें, तो उसके 5-6 घंटे बाद अखबार पर मकई का दर्रा छींट दें, चूजे इसे खाना शुरू कर देंगे। इस दर्रे को 12 घंटे तक खाने के लिए देना चाहिए। तीसरे दिन से फीडर में प्री-स्टार्टर दाना दें। दाना फीडर में देने के साथ-साथ अखबार पर भी छींटें। प्री-स्टार्टर दाना 7 दिनों तक दें। चौथे या पांचवे दिन से दाना केवल फीडर में ही दें। अखबार पर न छींटें। 8वें रोज से 28 दिन तक ब्रॉयलर को स्टार्टर दाना दें। 29 से 42 दिन या बेचने तक फिनिशर दाना खिलाएं। अंड़ा देने वाले बच्चों को अच्छा स्टार्टर दाना दें।

दाना और दवाएं कभी भी बेकार न होने दें

- दूसरे दिन से 5 दिन एनबॉयोटिक को मुर्गी दाने में मिलाकर दें। साथ ही स्ट्रेस रोक 5 मि.ली./100 चूजों को पानी में मिलाकर दें, ताकि चूजों को बीमारियों से बचाया जा सके। शुरू के दिनों में बिछाली(लीटर) को रोजाना साफ करें। पानी का बर्तन रखने की जगह हमेशा बदलते रहें।
- चूजों की अच्छी बढ़त के लिए स्वच्छ हवा का होना जरूरी है। रात में भी रोशनदान को पूरा न ढंकें, पर ध्यान दें कि चूजों को सीधी हवा नहीं लगानी चाहिए। बिछावन सदा सूखी और भुरभुरी रहे। बुरादे के सीलन वाले या गीले हिस्से को तुरंत हटा दें। पांचवें या छठे दिन ब्रॉयलर चूजों को रानीखेत एफ का टीका आंख तथा नाक में 1-1 बूंद दें। 14वें या 15वें दिन गम्बोरो का टीका, आईबीडी आंख तथा नाक में 1-1 बूंद दें।
- मरे हुए चूजे को कमरे से तुरंत बाहर निकाल दें। नजदीक के अस्पताल या पशु चिकित्सक से पोस्टमार्टम करा लें। पोस्टमार्टम कराने से यह मालूम हो जाएगा कि मौत किस बीमारी या कारण से हुई है।
- अंडे वाली मुर्गियों के पालने अथवा रियरिंग का समय ब्रूडिंग समाप्त होने के बाद 9-20 सप्ताह तक बहुत खास होता है। 8 सप्ताह की उम्र पर मुर्गे-मुर्गियों के लिंग की जांच कर के गलती से आ गए नर मुर्गों को अलग कर देना चाहिए। मुर्गियों को इस समय प्रति मुर्गी 1.5-2 वर्गफुट स्थान की जरूरत होती है। इसी प्रकार इनके पानी पीने और दाना खाने वाले बर्तनों का आकार भी बढ़ जाता है।
- 9-20 सप्ताह की उम्र वाली मुर्गियों को रात में बिलकुल रोशनी नहीं देनी चाहिए, पर रोशनी को धीरे-धीरे कम करते हुए 1 हफ्ते में बंद करना चाहिए। व्हाइट लेग हॉर्न मुर्गियों का 1 चूजा 1 दिन से 20 सप्ताह की अवधि में 7.5-8 किग्रा दाना खाता है।
- ब्रूडिंग और रियरिंग के बाद मुर्गियां 20 सप्ताह से 72 हफ्तों पर अंडे पर आ जाती हैं। इस समय प्रति व्हाइट लेग हॉर्न मुर्गी 2-2.5 वर्गफुट स्थान की जरूरत होती है। इसी प्रकार उनकी अन्य जरूरतें भी अब बढ़ जाती हैं। इस समय से अब पुनः रोशनी की मात्रा धीरे-धीरे 7-10 दिनों में वापस ले आएं। यह ध्यान दें कि लाइट निश्चित समय पर ही जलाएं या बुझाएं।
- अंड़ों को निश्चित समय पर ही दिन में 3-4 बार इकट्ठा करें। अंड़ा देने की 1 वर्ष की अवधि के दौरान मृत्यु दर हर हाल में 15 प्रतिशत से कम ही रहनी चाहिए। मुर्गीघर के दरवाजे पर एक बर्तन या नांद में फिनाइल का पानी रखें। मुर्गीघर में जाते या आते समय पैर धो लें। यह पानी रोज बदल दें। □□

संपादक, आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार,
ईमेलः akalra@ayurvet.com

खर्च कम, लाभ ज्यादा
मुर्गीपालन

भारत के लगभग 90 लाख लोग मुर्गीपालन व्यवसाय से जुड़े हुए हैं और हर वर्ष सकल घरेलू उत्पाद में इसका 70 हजार करोड़ का योगदान है। आप भी कम लागत यानि 500 रूपए से बैकयार्ड मुर्गी पालन शुरू कर सकते हैं। अगर व्यावसायिक रूप भी देना चाहे तो 10-15 हजार रुपए की लागत से छोटा सा बांस का फार्म बनाकर मुर्गियां पाल सकते हैं। बैकयार्ड मुर्गीपालन के लिए ग्रामप्रिया, वनराजा कारी निर्भीक आदि उन्नत नस्लों को पाला जा सकता है। देसी नस्लों की अपेक्षा उन्नत नस्लों में अंडा देने की क्षमता भी ज्यादा होती है और शारीरिक वजन भी ज्यादा होता है। जगह की भी ज्यादा जरुरत नहीं होती है। एक मुर्गी के लिए एक वर्ग फीट जगह की आवश्यकता होती है और अंडे देने वाली मुर्गी के लिए ढाई वर्ग फीट प्रति मुर्गी की दर से जगह की जरूरत होती है।

इस माह से हम आपको प्रत्येक अंक में मुर्गी की दो नस्लों की जानकारी दिया करेंगे। चलिए इस अंक में हम आपको दे रहे हैं

कारी रेनब्रो (बी-77)

- दिवस होने पर वजन : 41 ग्राम
- 6 सप्ताह में वजन : 1300 ग्राम

- 7 सप्ताह में वजन : 160 ग्राम
- सहनीय प्रतिशत : 98-99 प्रतिशत
- ड्रैसिंग प्रतिशत: 73 प्रतिशत
- 6 सप्ताह में आहार रूपांतरण अनुपात: 1.94 से 2.20

कारीब्रो-धनराजा (बहु-रंगीय)

- दिवस होने पर वजन : 46 ग्राम
- 6 सप्ताह में वजन : 1600 से 1650 ग्राम

- 7 सप्ताह में वजन : 2000 से 2150 ग्राम
- ड्रेसिंग प्रतिशत : 73 प्रतिशत
- सहनीय प्रतिशत : 97-98 प्रतिशत
- 6 सप्ताह में आहार रूपांतरण अनुपात : 1.90 से 2.10

आयुमिन वी5
विटामिन एंव खनिज तत्वों का संपूर्ण मिश्रण
AYURVET
- पशु को स्वस्थ रखने में व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में सहायक।
- पशु की कार्यक्षमता बढ़ाने में सहायता करे।
- पशु की प्रजनन क्षमता को बढ़ाने में सहायता करे।
पैक
1 कि.ग्रा. पैक, 5 कि.ग्रा. पैक

AYURVET™

पशु प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम

लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय (हिसार, हरियाणा)

द्वारा प्रमाणित

प्रशिक्षण स्थल

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन, विडाना, मुंडलाना चौकी

विषयः

- **दुधारू पशुओं का प्रबंधन** : दुधारू पशुओं की उत्तम नस्लें,दुधारू पशुओं का आधुनिक आवास, ग्रीष्मकाल एवं सर्दी ऋतु में दुधारू पशुओं का प्रबंधन, नवजात पशु, गाभिन पशु और दूध देने वाले पशुओं की देखभाल और उनका प्रबंधन, लाभदायक डेरी व्यवसाय।
- **दुधारू पशुओं का चारा प्रबंधन** : दुधारू पशुओं का संतुलित आहार एवं उसका महत्व, दुधारू पशुओं के लिए वर्ष भर हरे चारे का प्रबंधन–साइलेज अथवा अचार।
- **दुधारू पशुओं का रोग नियंत्रणः** दुधारू पशुओं की संक्रामक और गैर संक्रामक बीमारियां एवं उनकी रोकथाम, दुधारू पशुओं का टीकाकरण और उनका प्रबंधन, थनैला रोग का नियंत्रण, और दुधारू पशुओं में होने वाले चयापचय रोग एवं उनकी रोकथाम, दुधारू पशुओं में अन्तः एवं बाह्य परजीवियों का नियंत्रण, दुधारू पशुओं में होने वाले प्रजनन संबंधी रोग एवं उनकी रोकथाम, दुधारू पशुओं की प्रारंभिक प्राथमिक चिकित्सा, लौह रोग एवं उनकी रोकथाम।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : 8288954556, 9729288992, 8607272777, 996128765

आयुर्वेट रिसर्च फाउण्डेशन

नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित अनुसंधान केंद्र में निम्नलिखित जांच सुविधाएं उपलब्ध-

- ✓ खाद्य, पशु आहार और हरा चारा
- ✓ पानी
- ✓ मिट्टी
- ✓ जैविक खाद
- ✓ औषधीय पौधे
- ✓ एंटीबायोटिक्स
- ✓ माइकोटॉक्सिन

हमारे अनुसंधान केंद्र में आपका स्वागत है। हम शैक्षिक दौरों के लिए आवेदन आमंत्रित करते हैं।

हम मनुष्यों और पशुधन के लिए सुरक्षित और गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन में सहयोग करते हैं।

Registered Office : 4th Floor , Sagar Plaza, Distt. Centre, Vikas Marg, Laxmi Nagar, Delhi, INDIA - 110 092.
Phone: 011-22455993 • Email: info@ayurvet.com • Website: www.ayurvet.com

Corporate Office: Unit No. 101-103, 1st Floor, KM Trade Tower, Plot No. H-3, Sector-14, Kaushambi, Ghaziabad -201010 (U.P.)
Tel.: 0120-7100201 • Fax : 0120-7100202

AYURVET RESEARCH FOUNDATION

सफल ब्यांत - अधिक दूध उत्पादन तथा मुनाफे की ओर बढ़ते कदम

बेहतर पशु स्वास्थ्य, अच्छा पाचन और अधिक दुग्ध उत्पादन

स्वस्थ ब्यांत

बढ़िया पाचन प्रणाली

स्वस्थ अयन

एक्सापार

जेर गिराने व गर्भाशय की सफाई के लिए

रुचामैक्स

क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक

रैस्टोबल

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये,
तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए

AYURVET™ आयुर्वेट लिमिटेड

कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः customercare@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587

रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092

पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान